तिरुमल तिरुपति देवस्थान
सप्तगिरि
सचित्र मासिक पत्रिका
मार्च-2021 रु.5/-
श्रीनिवासमंगापुरम
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी जी का ब्रह्मोत्सव
२०२१ मार्च ०२ से १० तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

रथसप्तमि (१९.०२.२०२१) पर्वदिन में संपन्न हुआ तिरुमल स्वामी जी के सप्तवाहन सेवाएँ

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता ४-११)

हे अर्जुन! जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ; क्यों कि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

गीतानाम महस्त्रेण स्तवराजो विनिर्मितः।
यस्य कुक्षैच वर्तेत सोऽपि नारायणः स्मृतः।।

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

गीता के सहस्त्रनामों से निर्मित स्तवराज्य का स्मरण जो मनुष्य मन में करेगा वह साक्षात् नारायण स्वरूप कहा गया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

''मानव सेवा ही माधव सेवा है'' - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर **'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास'** के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निकैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा **'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति'** के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५१ मार्च-२०२१ अंक-१०

विषयसूची

लक्ष्मी जयंती	डॉ.हेच.एन.गौरी राव	07
तिरुपति के श्री कोदण्डरामस्वामी आलय और वार्षिक ब्रह्मोत्सव	डॉ.ए.बी.साई प्रसाद	11
भारत की संस्कृतिक विरासत एवं महाशिवरात्रि पर्व	डॉ.एस.हरि	14
श्री वेदनारायण स्वामी - नागलापुरम	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	18
अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस एवं नारी जागरण	श्रीमती आर.गायत्रि	22
कपिलतीर्थ	डॉ.के.एम.भवानी	31
तुम्बुर तीर्थ	डॉ.जी.सुजाता	34
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	38
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	41
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	42
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	44
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	46
होली की विशिष्टता	डॉ.पी.बालाजी	48
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	50
बालनीति- सच्चाई का नशा	श्री के.रामनाथन	51
चित्रकथा- किरातार्जुनीय युद्ध	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	दिव्या.एन	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम्

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी (श्रीनिवास मंगापुरम)
चौथा कवर पृष्ठ - श्री कामाक्षी सहित श्री कपिलेश्वर स्वामी (कपिलतीर्थ)

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

वन्दे जगन्माता

माता लक्ष्मीदेवी सनातन हिन्दू धर्म की प्रमुख देवी मानी जाती है। भगवान विष्णु की पत्नी है। पार्वती और सरस्वती के साथ वह त्रिदेवीयों में से एक है। धन, संपदा, शांति और समृद्धि की देवी मानी जाती है।

माता लक्ष्मी के जन्म के बारे में दो मत प्रचलन में है। एक मत के अनुसार वे भृगु महर्षि और कीर्ति नामक दंपति की पुत्री थी जिसने तपस्या करके विष्णु को वरण किया था। दूसरी मत के अनुसार वह सागर मंथन से जन्मी थी। फालगुन पूर्णिमा के दिन लक्ष्मीदेवी का जन्मदिन मनाते हैं। वैकुण्ठ में स्थित महालक्ष्मी सभी लोकों में विभिन्न नामों में भासित होती है। गृह में गृहलक्ष्मी नाम से महाराजा के समीप राज्यलक्ष्मी नाम से नागलोक में नागलक्ष्मी नाम से स्वर्ग लोक में स्वर्गलक्ष्मी नाम से प्रसिद्ध है।

सर्वोन्नत माता महालक्ष्मी प्रदान और विशिष्ट छः गुणों से भासित होती है। परमपुरुष श्रीमन्नारायण को नहीं छोडती है। इस कारण से भक्तों के प्रार्थनों को सुनकर भगवान से शीघ्र रूप से निवेदन कर अनुग्रह के लिए प्रेरित करती है। हमारे जीवन में वृद्धि ऐश्वर्य, शक्ति माँ के अनुग्रह से ही होता है। इसलिए महालक्ष्मी चिछशक्ति स्वरूपिणी नाम से ख्यात है। अर्थत् शाश्वत, सत्य अनंत परिपूर्ण आनंद तत्व महालक्ष्मी का निर्वचन है। श्री महालक्ष्मी जगन्माता रूप में व्याप्त होकर स्थिर होती है। इसी प्रकार नारायण के हृदय में भी निवास करती है। दया मूर्ति लक्ष्मी शब्द के लाभ प्रयोजन, संपत् क्षेम अभिवृद्दि, योग इस प्रकार के अनेक नानार्थ वेद में वर्णन किया है।

महालक्ष्मी के अनेक रूप है जिस में से अनेक आठ स्वरूप जिन को अष्टलक्ष्मी कहते हैं। लक्ष्मी का अभिषेक दो हाथी करते हैं। वह कमल के आसन पर विराजमान है। माँ की पूजा आठ रूपों में भक्तजन करते है। १)आदिलक्ष्मी, २)विद्यालक्ष्मी, ३)धनलक्ष्मी, ४)धान्यलक्ष्मी, ५)धैर्यलक्ष्मी, ६)गजलक्ष्मी, ७)विजयलक्ष्मी, ८)संतानलक्ष्मी। लक्ष्मी श्रीरसागर से जन्म लिया।

लक्ष्मी क्षीर समुद्रराजतनयां श्री रङ्गधामेश्वरी
दासीभूत समस्त देववानितां लोकैकदीपाकुराम्
श्रीमन्मन्द कटाक्षलब्धविभव ब्रहोन्द्र गङ्गाधरां
त्वां त्रौलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्।।

महालक्ष्मी को अम्बा, जगदेकमाता, अलवेलुमंगम्मा श्रीनिवास प्रिया! पद्मावती नामों से भक्तगण महालक्ष्मी को बुलाते हैं। भगवान श्री वेंकटेश्वर माँ के अनुग्रह केलिए बारह वर्षों तक तप किया। अंत में माँ पद्मसरोवर से पंचमी की तिथि में उद्भव हुई है। महालक्ष्मी को पद्मावती नाम से भक्तजन कीर्तन करते हैं। नित्यकल्याण हरातोरण से माँ का मंदिर भक्तजनों से शोभायमान होता है।

❁❁❁

माता लक्ष्मीदेवी सनातन हिंदू धर्म की प्रमुख देवी मानी जाती है। वे पार्वती और सरस्वती के साथ त्रिदेवियों में से एक देवी मानी जाती है। लक्ष्मी देवी वैभव, संपत्ति, आनंद और शुभ्रता का प्रतीक है। 'लक्ष्मी' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। एक 'लक्ष्य' और दूसरा 'मी' अर्थात 'लक्ष्य' तक ले जाने वाली।' जीवों में वह चेतना का स्वरूप है।

लक्ष्मी माता का उल्लेख पहले ऋग्वेद के श्री सूक्त में मिलता है। इसके अलावा विष्णु पुराण, गरुड पुराण, भविष्य पुराण जैसे विविध पुराणों में भी देवी का प्रस्ताव मिलता है। जैन तथा बौद्ध धर्म में लक्ष्मी का महत्वपूर्ण स्थान है। बौद्ध धर्मावलंबी लक्ष्मी को भाग्य की देवी मानते हैं।

आगे हम लक्ष्मी का जन्म, उसका स्वरूप, पूजा विधि और पूजा के फल के बारे में विवेचन करने का प्रयत्न करेंगे। लक्ष्मी जयंती मुख्यतः दक्षिण भारत में मनाया जाता है।

लक्ष्मी के जन्म की कथा :

माता लक्ष्मी के जन्म के बारे में दो मत प्रचलन में है। एक मत के अनुसार वे भृगु महर्षि और कीर्ति नामक दंपति की पुत्री थी जिस ने तपस्या करके विष्णु को वरण किया था। भृगु महर्षि की पुत्री होने से लक्ष्मी ''भार्गवी'' भी कही जाती हैं। दूसरी मत के अनुसार वह सागर मंथन से जन्मी थी। हम जिस धन, वैभवता की बात करते हैं वह सागर मंथन में जन्मी लक्ष्मी से संबंधित है।

धार्मिक ग्रंथों में वर्णित कथा इस प्रकार है-

प्राचीन काल में महाराज बलि के राज्य में दैत्य, दानव और असुर अति प्रबल हो गये थे। उधर स्वर्ग लोक में महर्षि दुर्वास के शाप से देवेन्द्र शक्तिहीन हो गए थे। ऐसी स्थिति में दानव स्वर्ग पर आक्रमण करके देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अपना आधिपत्य जमाया। इंद्रादि देवता भयभीत होकर इस संकट स्थिति से मुक्ति के लिए भगवान विष्णु के पास जाकर उनकी स्तुति करके अपनी विपदा सुनाकर अत्यंत विनीत भाव से इस संकट से पार करने की प्रार्थना की। विष्णु भगवान अभय देते हुए बोले- ''सब निर्भीक हो जाइए। समुद्र मंथन से जो अमृत निकलेगा उसके पान से अमर हो जाएँगे। पर संकट के समय में बुद्धि तथा मैत्री भाव से काम लेना चाहिए क्यों कि अब असुर शक्ति देवताओं की शक्ति से अधिक है। आप को दानवों के साथ मिलकर समुद्र मंथन करना चाहिए। अंततः राक्षसों का पराजय होगा। यह कार्य मंगलप्रद होगा।''

भगवान विष्णु के आदेशानुसार इंद्रदेव ने नारद महर्षि को महाराजा बलि के पास भेजने का निर्णय किया। नारद जी भी महाराज बलि के पास जाकर अमृत का लालच दिखाकर समुद्र मंथन में सहायता प्राप्त करने में सफल हो गए। राजा बलि इंद्र से समझौता कर लिया और समुद्र मंथन के लिए तैयार हो गए।

पुराणों के अनुसार यह सागर मंथन एक महत्वपूर्ण घटना थी। क्षीर सागर मंथन के लिए मंदराचल पर्वत को मथनी तथा वासुकी नाग को नेति (रस्सी) बनाया स्वयं भगवान विष्णु कच्छप का अवतार लेकर मंदराचल पर्वत

लक्ष्मी जयंती

- डॉ.हेच.एन.गौरी राव, मोबाइल - ९७४२५८२०००

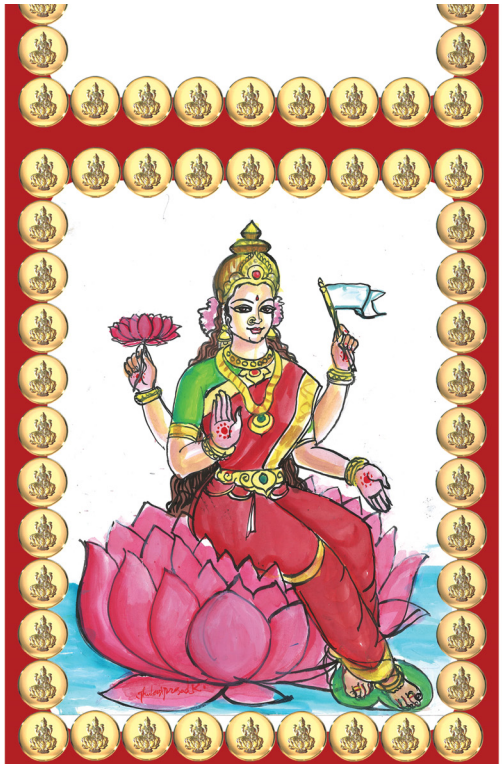

को अपनी पीठ पर रखकर उसका आधार बन गए। दैत्यों ने वासुकी के मुख की ओर का स्थान लिया और देवताओं ने वासुकी नाग के पूंछ की ओर का स्थान लेकर समुद्र मंथन करना आरंभ किया। इस समुद्र मंथन में २४ अपूर्व रत्न निकले।

समुद्र मंथन से सब से पहले हलाहल निकला जिस से सब जलने लगे। सब मिलकर शंकर भगवान से प्रार्थना करने पर उन्होंने उस हालाहल को अपने हथेली पर रखकर उसका पान किया। किंतु कंठ के नीचे नहीं उतरने दिया। इससे भगवान शंकर 'नीलकंठ' भी कहे गये। हथेली से जो विष पृथ्वी पर पड़ा उसको सांप, बिच्छू जैसे प्राणी ग्रहण किया, जिस से वे विषयुक्त बन गए। इसके बाद दोनों समुद्र मंथन को आगे चलाया। तब एक एक करके जो रत्न निकले उनको देव और दानवों ने आपस में बांट लिया। हलाहल के बाद दूसरा रत्न 'कामधेनु' निकली जिसे ऋषियों ने लिया फिर 'उच्चैश्रवा' घोड़े को राजा बलि ने प्राप्त किया। 'ऐरावत' हाथी को इंद्र ने, 'कौस्तुभ मणि', शंकु और 'शारंग धनुष' को भगवान विष्णु ने लिया। 'कल्पवृक्ष', 'पारिजात' और 'अप्सरा' को स्वर्ग लोक में रखा गया। आगे 'महालक्ष्मी' निकली। उन्होंने विष्णु को वरण किया। बाद में 'चंद्रमा' को भगवान शंकर ने अपने सिर पर धारण किया। 'पीयूष' को दैत्यों ने प्राप्त किया। अंत में 'धन्वंतरी' ने अमृत कलश को लेकर प्रत्यक्ष हो गए। भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके अपने रूप लावण्य ये दानवों को फंसा कर देवताओं को अमृत बांटा जिस से वे अमर हो गये और पूर्ववत शक्तिशाली बन गये। भगवान विष्णु के इस छल से क्रोधित होकर राक्षस देवताओं के साथ युद्ध किया। परंतु अंत में राक्षस परास्त हो गये। समुद्र मंथन से प्रादुर्भूत लक्ष्मी देवी को देवताओं ने रत्न सिंहासन पर बिठाके अभिषेक किया। दो सफेद हाथी आकाशगंगा लाकर अभिषेक किया।

अभिषेक के बाद महादेवी ने उत्पलमाला (काले कमल पुष्प माला) को लेकर महाविष्णु के पास जाकर उन्हें वरण किया। बाद में दोनों का विवाह संपन्न हुआ। महादेवी ने स्वयं जगत पालन के लिए भगवान विष्णु के साथ रहने को स्वीकार किया। वह विष्णु की हृदय वासनी बन गई। जिस दिन माता लक्ष्मी का प्रादुर्भाव समुद्र मंथन से हुआ, वह दिन फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा का दिन था। इससे हर साल इस दिन को लक्ष्मी जयंती के रूप में मनाया जाता है। लक्ष्मी जयंती के शुभ दिन उत्तर फल्गुणी नक्षत्र होता है। फल्गुन मास विजय का संकेत है। यह एक पवित्र मास के रूप में देखा जाता है। लक्ष्मी जंयती के अलावा इस दिन होलिका का दहन भी किया जाता है इसके अगले दिन होली त्योहार मनाने की परंपरा भी है। फल्गुनी पूर्णिमा को 'डोल पुर्णिमा', 'बसंत पूर्णिमा' और 'होली पूर्णिमा' के नाम से जाने जाते हैं।

उत्तर भारत में लक्ष्मी जी की पूजा दीपावली के दिन मनाई जाती है।

माता लक्ष्मी का स्वरूपः

समुद्र मंथन में अवतरित लक्ष्मी कमलासन पर विराजमान हुई दिखाई पड़ती हैं। उसके एक मुख और चार हाथ होते हैं। वे एक लक्ष्य और चार प्रकृतियों का प्रतीक है। उसके दो हाथों में दो कमल दिखाई पड़ते हैं, जो कोमलता का प्रतीक है। तीसरे हाथ से वर प्रदान करती है तो चौथे हाथ से अभयदान देती है। अर्थात साधक लक्ष्य सिद्धि के लिए सच्चे मन से चार प्रकृतियों को अपनाकर निर्भीक होकर काम करने पर देवी प्रसन्न होकर कार्य सिद्धि(वर) करवाती है। लक्ष्मी देवी के सामने दो सफेद हाथी होते हैं जो लक्ष्मी का अभिषेक करते हुए दिखाई पड़ते हैं। ये हाथियाँ मनोबल और परिश्रम का प्रतीक है।

माता लक्ष्मी के आठ अलग-अलग रूप होते हैं जिन्हें अष्टलक्ष्मी कहा गया है। वे है- धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, आदिलक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतान लक्ष्मी। अष्टलक्ष्मी की आराधना से मनुष्य की सभी समस्याओं का नाश होता है।

माता लक्ष्मी के अभिव्यक्त रूपों में 'श्री' रूप और 'लक्ष्मी' रूप दो हैं। 'श्री' रूप में माता लक्ष्मी कमल पर विराजमान है तो 'लक्ष्मी' रूप भगवान विष्णु के साथ दिखाई पड़ती है।

एक और मान्यता के अनुसार लक्ष्मी के दो रूप हैं- 'भूदेवी' और 'श्रीदेवी', भूदेवी धरती की देवी हैं, जो भूमि की उर्वरा से जुड़ी हुई है और उर्वरता को बढ़ाती है। श्रीदेवी स्वर्ग की देवी है जो सदा विष्णु के साथ रहकर लोक पालन करती है। इससे लक्ष्मी सदा देवी भी कही जाती हैं। वैष्णवों में माना गया है कि माता लक्ष्मी ही नारायण की आदिशक्ति है।

माता लक्ष्मी के अवतार :

माता लक्ष्मी भगवान विष्णु के हर अवतार में उनकी पत्नी रही है। श्री रामावतार में उनकी पत्नी सीता माता लक्ष्मी देवी थी तो श्री कृष्ण के अवतार में रुक्मिणी थी। कुछ लोग राधा को भी लक्ष्मी का रूप मानते हैं। राधा श्री कृष्ण की आंतरिक शक्ति थी। श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अवतार में अलमेलु (पद्मावती) लक्ष्मी माता थी।

माता लक्ष्मी के प्रमुख मंदिर :

पद्मावती मंदिर तिरुचानूर, लक्ष्मीनारायण मंदिर वेल्लूर, महालक्ष्मी मंदिर मुंबई, लक्ष्मीनारायण मंदिर दिल्ली, लक्ष्मी मंदिर कोल्हापुर, अष्टलक्ष्मी मंदिर

चेन्नई, अष्टलक्ष्मी मंदिर हैदराबाद, लक्ष्मी-कुबेर मंदिर बडलूर (चेन्नई) आदि प्रसिद्ध मंदिर हैं।

पूजा विधि :

समुद्र मंथन में महालक्ष्मी के प्रादुर्भाव के बाद उसने महाविष्णु को वरण किया था। इसलिए लक्ष्मी जयंती के दिन विष्णु समेत लक्ष्मी की पूजा की जाती है और यही श्रेयस्कर माना जाता है। महालक्ष्मी की कृपा के लिए की जानेवाली पूजा विधि और पारायण के बारे में पुराणों में अनेक कथाएँ हैं। इस दिन सूर्योदय से पहले (ब्रह्ममुहूर्त में) उठ कर नहाके शुभ्र वस्त्र धारण करके लक्ष्मी पूजा का संकल्प करके पूजा स्थल को स्वच्छ और पवित्र किया जाता है, क्यों कि स्वच्छता से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती हैं। एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर माता लक्ष्मी और विष्णु भगवान की प्रतिमा को स्थापित करके विधिवत पूजा किया जाता है। माँ लक्ष्मी को लाल वस्त्र और भगवान विष्णु को पीले वस्त्र समर्पित किया जाता है। घी के दीपक जलाकर लक्ष्मी को कमल पुष्प व लाल पुष्पों से अर्चना की जाती है।

उसके बाद माता लक्ष्मी को चूड़ीया, तिलक जैसी श्रृंगार की वस्तुएँ चढ़ाये जाते हैं। खीर जैसे

मिष्ठान अर्पित किया जाता है। इसके बाद धूप दीप से भगवान की आरती उतारी जाती है। बाद में माता लक्ष्मी की जन्म की कथा को श्रद्दा भक्ति के साथ सुनाई या पढ़ाई जाती है।

पूजा विधि के अंत में अनजाने किए भूलों की क्षमा याचना किया जाता हैं। ९ वर्ष से कम उम्र वाली लड़की को खीर का प्रसाद दिया जाता हैं।

दक्षिण भारत के मंदिरों में इस दिन माता की विशेष पूजा और अभिषेक आदि किए जाते हैं। विष्णु सहस्रनाम, लक्ष्मी सहस्रनामावली आदि का पारायण किया जाता है, ताकि लक्ष्मी की कृपा उनको प्राप्त हो सके। सच्चे मन से लक्ष्मी का अनुष्ठान करने पर मनोकामना प्रास होती है।

पूजा फल :

लक्ष्मी जयंती पर विधिवत पूजा करने पर माँ की कृपा से उसे धन-धान्य समृद्धि और सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होती है। जहाँ स्वच्छता, सुव्यवस्था होगी, वहाँ लक्ष्मी स्थिर वास करेगी। इसी स्वच्छता को 'श्री' कहा गया है। जहाँ ये सद्गुण होंगे वहाँ रोग और दरिद्रता से मुक्त होकर स्वस्थ्य, शांति के साथ जी सकते हैं। दुढ भक्ति और सच्चे मन से प्रार्थना करने पर मनोकामना की पूर्ति होती है। कहा जाता है कि श्री शंकराचार्य द्वारा लक्ष्मी देवी की प्रसन्नता के लिए कनकधारा स्तोत्र की रचना की गई थी जिस से लक्ष्मी देवी ने प्रसन्न होकर सोने की धारा बरसाई।

तिरुपति के श्री कोदण्डरामस्वामी आलय और वार्षिक ब्रह्मोत्सव

- डॉ.ए.बी. साई प्रसाद,
मोबाइल - ९९८०५६७५४१

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी जिन को उत्तर भारत के लोग बालाजी के नाम से जानते हैं उन के बारे में कहा गया है:

वेन्कटाद्रि समम् स्थानम् ब्रह्माण्डे नास्ति किंचेन
वेन्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति

अर्थात् वेन्कटाद्रि-तिरुमला-जैसा स्थान इस ब्रह्माण्ड में कहीं भी नहीं है और वेंकटेश्वर की बराबरी करनेवाला भगवान न कभी था और न कभी रहेगा। इस क्षेत्र की चर्चा हम कई पुराणों में- वराह, पद्म, गरुड, ब्रह्मण्ड, मार्कण्डेय, हरिवंश वामन, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, आदित्य, स्कंध, भविष्योत्तर- स्पष्ट देख सकते हैं। हमारा देश रामक्षेत्र कहलाता है। इसलिए हर क्षेत्र का संबंध राम और रामायण से जुडा है। तिरुमल-तिरुपति इस केलिए अपवाद नहीं है।

त्रेता युग में सीता मैया को ढूँढते हुए, तुलसी के अनुसार सब से पूछ-ताछ करते हुए-

हे खग, मृग, हे मधुकर श्रेनी

तुम्ह देखी सीता मृगनैनी (रामचरित मानस-अरण्यकाण्ड)

राम लक्ष्मण तिरुमल पहुँचते हैं। यहाँ से आगे, वाल्मीकि के अनुसार विराध के कहने पर, तुलसी के अनुसार शबरी की सलाह मानकर ऋष्यमूक पर्वत प्रांत पहुँचते हैं। लगता है श्री राम, लक्ष्मण के उस आगमन की स्मृति में आनंद निलय के रामुलवारि मेडा (रामजी का भवन में सीता राम लक्ष्मण की मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई होगी। बालाजी मंदिर में स्नपन मण्डप को पार करने के बाद हम रामुलवारि मेडा को देख सकते हैं। तंग रास्ते के दोनों तरफ दो मंच हैं। यहाँ पर ये मूर्तियाँ विराजमान थी। अब इन को अंदर रखा गया है।

सीता राम लक्ष्मण की मूर्तियों के बारे में और एक दिलचस्प बात भी कही जाती है। चौदहवीं सदी के श्री रामानुजाचार्य अलमेलुमंगापुरम में जो तिरुचानूर नाम से प्रसिद्ध है, रामायण का अध्ययन कर रहे थे। अचानक एक अज्ञात भक्त श्री रामानुजाचार्य से मिले और उनको सीता, राम, लक्ष्मण की मूर्तियों को सौंपा। श्री रामानुजाचार्य उन मूर्तियों को तिरुमला के आनंदनिलयम में रखा। इन मूर्तियों की अपनी एक विशेषता है। इन में राम लक्ष्मण किरीट धारी नहीं है। सीता मैया रनिवास की वेश भूषा में नहीं है। थे वनवासी मूनियों के जैसे दिखाई देते हैं। कारण उनका वनवास है। राम लक्ष्मण सीता की खोज में आये थे। इसलिए इन मूर्तियों के

साथ उनके मित्र हनुमान जांबवान, सुग्रीव और अंगद की मूर्तियाँ भी रामुलवारि मेडा में हैं।

तिरुपति शहर के चिन्न (छोटा) बजार वीथी में श्री यह मंदिर कोदण्डराम स्वामीजी का मंदिर है। कहा जाता है कि एक हजार साल पुराना है। वराह पुराण के अनुसार रावण संहार के बाद सीता राम लक्ष्णम लंकापुरी से तिरुपति पहुँचे थे। उनके इस आगमन की दिव्य स्मृति में जांबवान ने इन तीनों की भव्य मूर्तियों की प्रतिष्ठा की थी। इस के उपरांत द्वापर युग में अर्जुन पुत्र अभिमन्यू के पोता जनमेजयने, जो अपने नाग यज्ञ के लिए प्रसिद्ध है, मंदिर का निर्माण किया था। तदनंतर काल में अनेक राजा महाराजाओंने अपने अपने योगदान मंदिर की भव्यता को बढाया था। सन् १४३० के शिला लेख के अनुसार शठगोपदास नरसिंहराय मुदलियार ने विजयनगर राज वंश के अच्युतरायलु के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए सीता राम लक्ष्मण की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की है। ये तीनों मूर्तियाँ कद्दावर है। इस प्रकार की कद्दावर मूर्तियों को हम अन्य मंन्दिरों में देख नहीं सकते। राम और सीता की मूर्तियाँ तुलसी द्वारा वर्णित सीता राम के सौंदर्य को साबित करते हैं। राम के बारे में तुलसी ने अपने रामायण रामचरित मानस काव्य में लिखा है- ''कोटि मनोज लजावन हारे''। ठीक इसी तरह सीता के बारे में लिखा है छविगृह मध्य दीप शिखा। लक्ष्मण की मूर्ति भी काफी आकर्षक है। जो आकर्षण और सौंदर्य आप दक्षिण भारत की मूर्तियों में देखते है वह आकर्षण और सौंदर्य आप को उत्तर भारत की मूर्तियों में देखने को नहीं मिलता। साधारण तथा जहाँ सीता राम लक्ष्मण होते हैं वहाँ हनुमान भी होते हैं। पर श्री कोदण्ड रामस्वामी मंदिर के गर्भगृह में हनुमान नहीं है। उनके लिए एक अलग मंदिर है। तिरुमल तिरुपति के हनुमान क्षेत्र पालक हैं। क्षेत्र पालक होने के कारण कई जगहों पर ड्यूटी बजानी पडती है। शायद इसलिए उनकी मूर्ति गर्भ गृह में देखने को मिलती नहीं है।

बालाजी मंदिर में जो जो सेवाये हैं वे सारी सेवायें तिरुपति के श्री कोदण्डरामस्वामी के ब्रह्मोत्सव भी उसी ठाटबाट से मनाया जाते हैं जितनी ठाट बाट से सालकटला नवरात्रि ब्रह्मोत्सव मनाये जाते हैं।

जो उत्सव बहुत बडे पैमाने पर मनाये जाते हैं उन्हे ब्रह्मोत्सव कहते हैं कहा जाता है कि स्वयं ब्रह्मा ने ब्रह्मोत्सव पहलीबार इस उत्सव का आयोजन किया था। यह मानाजाता है कि इस ब्रह्मोत्सव का सफल आयोजन के लिए स्वयं ब्रह्मा पृथ्वी पर उतर आते हैं। श्री वेंकटेश्वर

सहस्रनाम स्तोत्रम् में इसका जिक्र देखा जा सकता है। सालकट्ला नवरात्रि ब्रह्मोत्सवम् और श्री कोदंडरामस्वामी ब्रह्मोत्सवम् में बस एक ही अंतर है। चान्द्रमान पंचांग और सौर मान पंचांग में दस दिनों का अंतर होता है। चांद्रमान पंचांग के अनुसार एक साल के ३५५ दिन होते हैं और सौरमान पंचांग के एक साल में ३६५ तीन होते हैं। इस लिए हर दिन साल में एक अधिक मास आता है। जब अधिक मास आता है तब सालकट्ला नवरात्री ब्रह्मोत्सवम को दो दो बार मनाना पडता है। २०१५, २०१८ और २०२० में ति.ति.दे. ने दो दो ब्रह्मोत्सवओं को आयोजन किया। अधिक चैत्र आने की संभावना नहीं है। इस साल का कोदण्ड रामस्वामी ब्रह्मोत्सव माघमास के अमावस के दिन अर्थात् मार्च महीने के १३वीं तारीख को शुरु होता है और फागुन मास के शुक्ल पक्ष के सप्तमी तिथी पर अर्थात् २१.०३.२०२१ को समाप्त होता है। ध्यान देने की बात है कि श्री कोदण्डरामस्वामी के ब्रह्मोत्सवों का आयोजन पिछले कुछ सालों से ही हो रहा हैं। इन ब्रह्मोत्सवों के आयोजन का श्रेय ति.ति.दे. के पदाधिकारों को मिलता है।

सालकटला नवरात्री ब्रह्मोत्सव जैसे ही श्री कोदण्डरामस्वामी ब्रह्मोत्सव को मनाया जाता है। १२.०३.२०२१ के सुबह अंकुरार्पण होता है। अंकुरार्पण उत्सव इस उत्सव की उर्ववरता एवं ऊर्जा का प्रतीक है। इस के बाद शाम को ध्वजारोहण होता है। ध्वजा पर विष्णु जी के वाहन गरुड का चित्र होता है। ध्वजा आह्वान का चिह्न है। सभी देवी देवतों को ब्रह्मोत्सव में भाग लेने के लिए न्योता दिया जाता है। १३.०३.२०२१ के शाम को उत्सव मूर्ति को पेद्दा (बडा) शेषवाहन पर बिठा कर जुलूस निकाला जाता है। इसके बाद चिन्न (छोटा) शेषवाहन, हंसवाहन, सिंहवाहन, मोतीवितानवाहन, कप्लवृक्षवाहन, सर्वभूपालवाहन, पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव, गरुडवाहन, हनुमद्वाहन, गजवाहन, सूर्यप्रभावाहन, चंद्रप्रभावाहन, रथ-यात्रा, अश्ववाहन, चक्रस्नान, ध्वजावरोहणों से राम जी विराजमान होकर भक्तों को दर्शन देते हैं।

ध्वजावराहोण के साथ ब्रह्मोत्सव समाप्त होते हैं।

श्रीरामनवमी (२१.०४.२०२१) के सुऊवसर पर श्रीरामजी हनुमद्वाहन पर बैठ कर विहार के लिए निकलते है, इसके उपरांत सीता राम कल्याण का आयोजन होता है। २२.०४.२०२१ को श्रीराम जी का राज तिलक होता है।

हर महीने के पुनर्वसु नक्षत्र के दिन मंदिर में सीता राम कल्याणम् (शुभ विवाह) का आयोजन भव्य रुप से होता है। जब एक महीने में दोबार पुनर्वसु नक्षत्र आता है तब दोबार सीता राम कल्याण का आयोजन होता है। इस साल के सितंबर महीने में पुनर्वसुनक्षत्र दो बार-०३.०९.२०२१ और ३०.०९.२०२१ आता है। इतना ही नहीं हर अमावस के दिन सहस्र कलश आभिषेकम का आयोजन होता है।

इस साल की अर्थात् चांद्रमान के अनुसार १३.०४.२०२१ को प्रारंभ होने वाले प्लव नाम संवत्सर की अपनी एक विशेषता। अगले वर्ष तक अर्थात् २०२२ तक मंदिर निर्माण को पूरा करने के लिए अयोध्या में काम युद्ध गति से हो रहा है। देश देशांतरों से लोग मंदिर निर्माण के लिए यथा संभव योगदान दे रहे हैं। मंदिर का निर्माण एक या चंद दाताओं के दान से नहीं साधारण से साधारण व्यक्तियों के दान से बन रहा है। राम सेतु के निर्माण के समय गिलहरी ने भी राम की सहायता की थी। ठीक उसी प्रकार सब लोग अपना-अपना हाथ बढा रहे हैं।

राम है तो भारत है, भारत है तो राम है।

जय श्रीराम! ओंम तत् सत्!!

❁❁❁

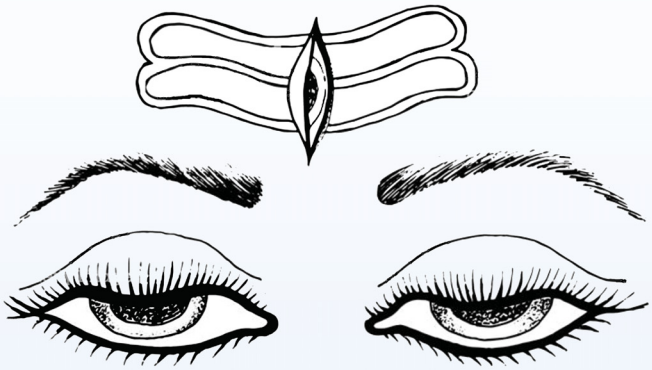

भारत की संस्कृतिक विरासत एवं महाशिवरात्रि पर्व

- डॉ.एस.हरि, मोबाइल - ९३९८४५४१६८

भारत एक महान देश है। इसकी संस्कृति महान है। संस्कृति का सीधा प्रभाव त्यौहारों पर स्पष्ट देखा जाता है। क्यों कि त्यौहार हमारी सांस्कृतिक विरासत को लेकर चलते हैं। इस अर्थ में भारतीय त्यौहार अपने वास्तविक विचारों को प्रदर्शित करते हैं। त्यौहार एक सांस्कृतिक घटना है और संस्कृति को समझने का आधार भी हैं। इसलिए त्यौहारों को संस्कृति का वाहक माना जाता है। मिलजुलकर रहते हुए सहयोग व सद्भावनापूर्ण व्यवहार भारतीय संस्कृति का निर्धारक तत्व है। इसकी वैविध्यपूर्ण संस्कृति हमारे विभिन्न त्यौहारों व पर्वों पर देखी या समझी जाती है। त्यौहारों से मानवीय सभ्यता का विकास होता है। अन्य देशवासियों की तुलना में भारत में अनेक त्यौहार मनाये जाते हैं। इसलिए भारत को त्यौहारों का देश कहा जाता है। इस प्रकार त्यौहार भारत की संस्कृति विरासत के धरोहर हैं। यहाँ दीवाली, होली, दशहरा कृष्णाष्टमी, संक्राति, महाशिवरात्रि आदि त्यौहार बडे चाव से मनाये जाते हैं। हमारे इन सभी त्यौहारों में महाशिवरात्रि का त्यौहार विशेष महत्व रखता है। भगवान शिव हिंदुओं के प्रमुख देवताओं में से एक हैं, जिन्हें हिंदु लोग बडी निष्ठा आस्था और श्रद्धा के साथ स्वीकारते और पूजते हैं। अतः महाशिवरात्रि के दिन शिव की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान है।

महाशिवरात्रि हिन्दुओं का एक प्रमुख त्यौहार है। यह भगवान शिव के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह पावन पर्व फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। भारतीय कैलेंडर के अनुसार यह माघ के महीने में आता है। इस समय में प्रकृति मानव शरीर में ऊर्जा बढ़ाने में अनुकूल व अधिक सहायक होती है कहा जाता है कि यह शिव और शक्ति के मिलन की रात है। इसे प्रकृति और पुरुष के मिलन की रात के रूप में मनाने की परंपरा है। वस्तुतः मानव जीव प्रकृति और खगोलीय घटनाओं से संचालित होता रहता है। इसलिए उसको प्रकृति के अनुसार किस तरह जीवन जीना चाहिए? और प्रकृति के बुरे परिणामों से किस तरह बचकर रहना चाहिए? यह अच्छी तरह हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि स्पष्ट बता गए हैं।

वेदों में प्रकृति को ईश्वर का साक्षात् रूप मानकर उसके हर रूप की वंदना की गयी है। इसके अलावा आसमान के तारे और आकाश मंडल की स्तुति कर उनसे रोग और शोक मिटाने की प्रार्थना से हर तरह की सुख-समृद्धि पायी जा सकती है। महाशिवरात्रि एक ऐसा त्यौहार है जब प्रकृति व्यक्ति को अध्यात्मिक शिखर की ओर ले जाती है। इस प्रकार कृषि प्रधान भारतीय संस्कृति में हर त्यौहार प्रकृति की आराधना में समर्पित है। अतएव महाशिवरात्रि का यह पावन पर्व प्रकृति से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। इस दृष्टि से यह भारतीय संस्कृति और विरासत का प्रतीक बना हुआ है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महाशिवरात्रि महात्वपूर्ण मानी जाती है। योग परंपरा में शिव की पूजा ईश्वर के रूप में ही नहीं की जाती, बल्कि उन्हें आदि गुरु माना जाता है। वे प्रथम गुरु हैं, जिन से ज्ञान की उत्पत्ति हुई थी। कई हजार वर्षों तक 'ध्यान' में रहने के पश्चात् एक दिन वे पूर्णतः शांत हो गए, वह दिन महाशिवरात्रि का है। उनके अंदर कोई गति नहीं रह गयी और वे पूर्णतः निश्चल हो गए। इसलिए तपस्वी महाविशरात्रि को निश्चलता के रूप में मनाते हैं। निश्चलता माने जड़ नहीं है। क्यों कि प्रकृति के कण-कण में पाये जानेवाले परम शिव को चलन की कोई जरूरत नहीं रही। समस्त सृष्टि में शिव को स्थिर चेतना पूर्ण रूप से भरी हुई दिखायी देती है। निरंतर समस्त अंड, पिंड एवं ब्रह्मांड में पाये जाने के कारण उन्हें 'सदाशिव' नाम से अभिहित किया जाता है।

शिव पुराण के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ है। विवाह के पश्चात शिवजी अपने वैराग्य जीवन त्यागकर गृहस्थ जीवन अपनाने लगे थे। इसलिए इस दिन भगवान शिव-पार्वती की विधि-विधान से आराधना की जाती है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन भगवान शिव का व्रत रखनेवालों को सौभाग्य, समृद्धि तथा संतान की प्राप्ति होती है। महाशिवरात्रि के दिन विशेष रूप से 'उपवास' रखने का नियम है। इसके अलावा रात भर जागरण करने की परंपरा है। इस रात के माध्यम से अपने जीवन में

''अंधेरे और अज्ञान पर काबू'' पाने का संकल्प किया जाता है। रात भर ''ओम नमः शिवाय'' 'ओम नमः शिवाय, महामंत्र का जप किया जाता है। शिव की आराधना की यह महाशिवरात्रि पूरे भारतवर्ष में बडी श्रद्धा के साथ मनायी जाती है। शिव की आराधना साधना, उपासना से मनुष्य अपने पापों एवं संतापों से इसी जन्म में मुक्ति पा सकता है।

सृष्टि की संरचना और संचालन का श्रेय ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर को दिया जाता है। इन तीनों देवताओं को एक साथ त्रिमूर्त या त्रिदेव कहा गया है। इन में आदिदेव महेश्वर या शंकर मानेजाते हैं। इन्हें देवों के देव अर्थात् महादेव भी कहते हैं। वे कई नामों से जाना जाता है। यथा शंकर, महेश, नीलकंठ, भोलेनाथ, विश्वंभर पशुपति, गंगाधर आदि। तंत्र साधना में इन्हें भैरव की संज्ञा दी गयी है। वेदों में इन्हें रुद्र कहा गया है। शिव अपने हाथों में इमरू और त्रिशूल लिए हुए हैं। सिर पर गंगादेवी है, इसलिए गंगाधर भी कहते हैं। आधा शरीर पार्वती को समर्पित होने के कारण, इने अर्धनारीश्व भी कहते हैं। नंदी यानी बैल

इनका वाहन शिव कैलाश के पर्वत के निवासी हैं। वे तांडव नृत्य करते हैं। विश्वंभर नाम इन्हें समूचे संसार के देवता के रूप में स्थापित करता है। भक्तों के प्रति दयालू होने के कारण भोलेनाथ नाम बन पडा है। इस प्रकार शिव के कई ऐसे नाम हैं, जिन से उनकी महिमाओं का पता चलता है। इनकी भक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है। अतः इनकी पूजा सच्चे दिल की होती है।

महाशिवरात्रि उपवास का वैशिष्ट्य :

संपूर्ण भारत वर्ष में उपवास या व्रत महाशिवरात्री पर्व का एक अभिन्न अंग होता है। इस दिन बहुत से लोग उपवास अथवा व्रत रखते हैं। इस उपवास के पीछे एक प्रमुख कारण यह है उपवास से शरीर का निर्विषीकरण (शरीर से हानिकारक पदार्थों की सफाई होना) होता है। शरीर में हल्कापन महसूस होता है और मन में हो रही उथल-पुथल से राहत मिलती है। इस से मन सचेत और जागरूक हो जाता है। मन को सचेत एवं जागृत अवस्था में रखना शिवरात्रि उपवास का वैशिष्ट्य है।

वास्तव में सच्चा-सच्चा व्रत काम, क्रोध, मद, मात्सर्य आदि विकारों का मन से परित्याग करना है।

शिव पुराण के अनुसार शिवरात्रि पर्व जागरण का विशेष महत्व है। पौराणिक कथा है कि एक दिन पार्वती जी ने भगवान शिवशंकर से पूछा है- ऐसा कौन-सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत-पूजना है जिस से मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर सकते हैं? तब शिव जी ने पार्वती को शिवरात्रि के व्रत का उपाय बताया था। यहँ भी मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकला विष पिया था और उनको नींद न आने देने के लिए गण पूरी रात उनके साथ जागे थे। उनका आशीर्वाद पाने के लिए वे इस दिन खास रीतियों से व्रत भी रखते हैं। पूरी रात मनाये जाने वाले इस त्यौहार का मुख्य उद्देश्य यह निश्चित करना है कि ऊर्जाओं का यह प्राकृतिक चढ़ाव या उतार अपना सही रास्ता पा सके।

माना जाता है कि सृष्टि की शुरुआत में इसी दिन आधी रात में भगवान शिव का निराकार से साकार रुप (ब्रह्मा से रुद्र के रुप) में अवतरण हुआ था। इसी रूप में प्राचीन काल से शिवरात्रि जागरण का महत्व चला आ रहा है। पुरुष और प्रकृति के मिलन की रात, जिसे सृष्टि के आरंभ का स्त्रोत माना गया

है। इस प्रकार महाशिवरात्रि व्रत रखनेवालों की मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। उनके समस्त पापों का हरण होगा। मोक्ष प्राप्त होगा।

शिव पुरान के अनुसार शिव ज्योतिर्लिंगम का रूप रात के समय में ही प्रादुर्भावि हुआ है। अतः शिवरात्री रात में जागरण का विशेष महत्व बताया गया है।

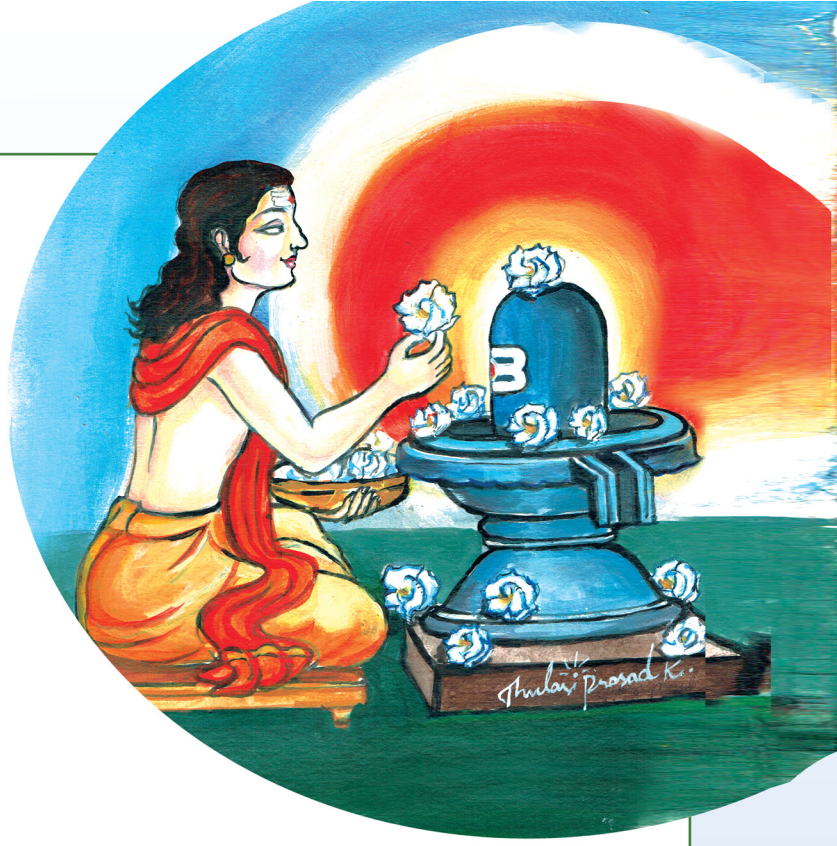

पर्व की विशेषताएँ :

महाशिवरात्रि का पर्व स्वयं परमपिता परमात्मा के सृष्टि पर अवतरित होने का स्मरण दिलाता है। महाशिवरात्री के दिन व्रत धारण करने से समस्त मनोविकारों का हरण होता है। मनुष्य की हिंसक प्रवृत्ति भी नियंत्रित होती है। निरीह लोगों के प्रति दयाभाव उपजता है संयम और नियम जीवन के अंग बनते हैं। जगत में रहते हुए मानव कल्याण करनेवाला व्रत है महाशिवरात्री। शिव की साधना से धन-धान्य, सुख-सौभाग्य और समृद्धि की कमी कभी नहीं होती। सत्य ही शिव है और शिव ही सुंदर है। तभी आक्षुतोश को सत्यम शिवम सुंदरम कहा जाता है। इस प्रकार महाशिव आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। योगिक परंपरा में शिव को भगवान की तरह नहीं मानते, बल्कि उन्हें प्रथम गुरु या आदि गुरु मानते हैं।

व्रत से होने वाले लाभ :

महाशिवरात्री व्रत निष्ठा के साथ निभाने वाले उनकी समस्त मनोकामनों की पूर्ति होती है।

१) अविवाहितों को शीघ्र ही विवाह हो जाता है।

२) निस्संतान दम्पतियों को संतान की प्राप्ति होती है।

३) दाम्पत्य जीवन में प्रेम व सामंजस्य बना रहता हैं।

४) शत्रुओं का विनाश होता है।

५) नकारात्मक शक्तियाँ क्षीण होती है और सकारात्मक शक्तियों की वृद्धि दीर्घकाल की बीमारियों से मुक्ति मिलती है और संपूर्ण स्वास्थ्य बना रहता है।

भारतीय संस्कृति में महाशिवरात्री पर्व का बडा महत्व है। त्यौहारों पर लोग शत्रुता भूल जाते हैं। और प्यार का व्यवहार करते हैं। लोगों में भाईचारे की भावना पनपती है। इस से भारतीय एकता को बल मिलता है। इस प्रकार भारतीय त्यौहार भारतीय संस्कृति की उपलब्धि कही जा सकती है। महाशिवरात्रि शिव और शक्ति का अभिसरण है। शक्ति के अभाव में शिव शिव न होकर शव बन जाता है। महाशिवरात्रि के उपवास व जागरण का पौराणिक व वैज्ञानिक महत्व है। भूमि, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार आदि में युक्त समस्त शक्ति परमेश्वर का स्वरूप ही है। इस तरह शिव-स्वरूप हमें बताता है कि उनका रूप विराट और अनंत है, उनकी महिमा अपरंपार है। उन में ही सारी सृष्टि समाई हुई है। मानव जीवन को सत्य, ईमानदारी मार्ग से लौकिक जीवन से अलौकिक जीवन की ओर अग्रसर करने के लिए महाशिवरात्रि पर्व के निष्ठापूर्ण निर्वहण करने की अवश्यकता व्यक्त की गयी है। अतः यह पावन पर्व हमरी पौराणिक व सांस्कृतिक विरासत है।

❁❁❁

श्री वेदनारायण स्वामी - नागलापुरम

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी,
मोबाइल - ९८४४०४०२९९

श्री वेदनारायण स्वामी नागलापुरम मंदिर, तिरुपति से चेन्नै के रास्ते में उनचास किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। नागलापुरम में मंदिर के गेट से देखा गया झंडा इस मंदिर का मुख्य आकर्षण है। हर महीना मार्च २५,२६,२७ / २६,२७ और २८ की शाम को, सूरज की किरणें सीधे राजगोपुर से आती है, जो कि मूल विराट से ६३० फीट की दूरी पर है और पहले दिन स्वामी के नाभी और पैरों पर विकीर्ण होता है। दूसरे और तीसरे दिन स्वामी के चेहरे पर। इस उत्सव को देखने के लिए आन्ध्रप्रदेश के भक्तों के अलावा अन्य राज्यों के भक्त भी आते हैं।

त्यौहार यहाँ शुद्ध द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी के दिनों में मनाया जाता है। इन तीन दिनों के दौरान सूर्य की किरणें क्रमशः स्वामी के पैरों, नाभी पर और माथे पर पड़ती हैं। वास्तव में नागलापुर में स्थित श्रीवेदवल्ली सहित श्री वेदनारायण स्वामी के प्लवोत्सव का कार्यक्रम पाँच दिनों तक मनाया जाता है। २४ और २५, मार्च दो दिन वीधि उत्सव मनाया जाता है। तीन दिनों तक माने २६, मार्च से लेकर २८,मार्च तक यहाँ नौका उत्सव आयोजित किया जाता है। ब्रह्मोत्सव का आयोजन ज्येष्ठ मास में होता है। तिरुमला में ब्रह्मोत्सव जिस प्रकार मनाते हैं, उसी प्रकार इधर भी ब्रह्मोत्सव धूम-धाम से मनाया जाता है। इसे तब वेदपुरी, वेदारण्य क्षेत्र और हरिकैथोन के नाम से जाना जाता था।

किंवदंती है कि त्रेता युग में जब सोमकासुर ने वेदों को चुरा लिया और समुद्र में छिप गया, एक बड़ी मछली के अवतार में विष्णु ने राक्षस को मार डाला और उन्हें पुनः प्राप्त किया। नागलापुरम को 'अरिगंदपुरम' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि यह दुश्मनों के लिए खतरे की घंटी है। जब ब्रह्मा को वैकुंठ में विष्णु नहीं मिला तो उनके पास आए और यहाँ भगवान को पाया, इसलिए इसे 'हरिगंदपुरम' कहा जाता है, जिसका अर्थ है एक ऐसा स्थान जहाँ हरि मिला था। शातवाहन शासन के अंत में इस दक्षिण क्षेत्र को महाजनपद कहा जाता था और महासेनापति स्कंद नाम के शासन में, यह एक नाग राजा बन गया। जब विष्णु ने ब्रह्मा को चार वेद दिए और ब्रह्मा ने उनका प्रचार करना शुरू किया, तो उन्हें चतुर्वेदी मंगला नागपुडोली कहा जाने लगा।

कुलोत्तुंगा चोल के शासन काल के अंत में राजमलदेव यादवराय (भुजबल सिद्ध रासर) नाम के एक जागीरदार राजा ने अपने पूर्वजों के नाम पर एक मंदिर बनवाया था, जिसका नाम यादव

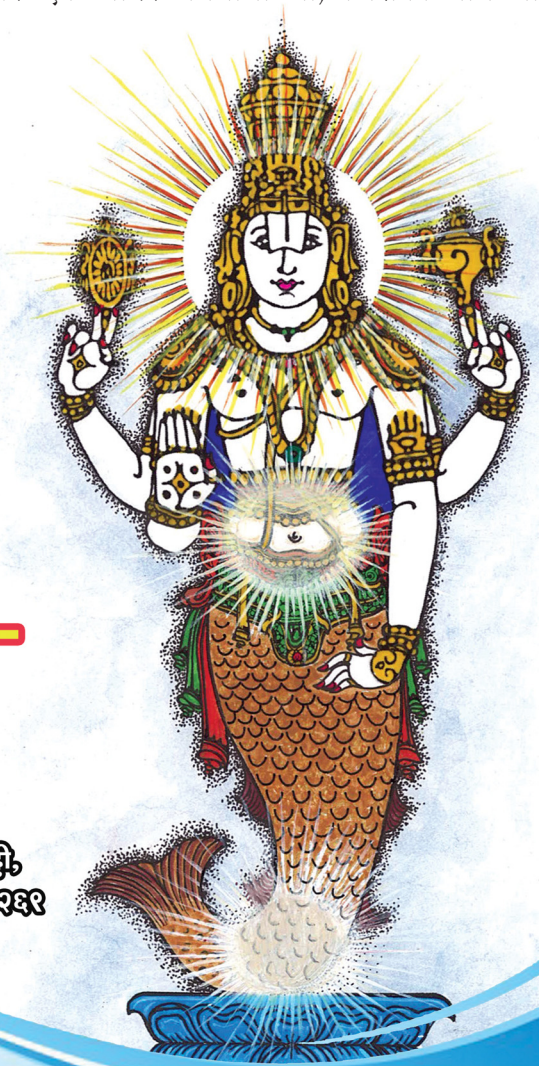

नारायण। यह मंदिर करिया माणिक्य पेरुमाल के नाम से प्रसिद्ध है। तेरहवीं शाताब्दी में निर्मित मुख्य मूर्ति अज्ञात कारणों से टूटी हुई है। इस घटना की तारीख ज्ञात नहीं है। महाविष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार मछली के रूप में है। जो कि कृत युग में नागलापुरम में हुआ था। वेदों को बचानेवाले वेदनारायण का मंदिर बनाने का विचार किसी के मन में नहीं था, तो भगवान ने अपने लिए बनाया। यह स्वयं के लिए झुकाव नहीं था जब श्रीकृष्ण देवराय, कुंभकोणम में महामुखी महोत्सव से पुनः लौटते हुए, भगवान यादवनारायण की पूजा करने का इरादा रखते थे।

इस मंदिर के स्थान को 'नागलापुरम' कहा जाता है। 'नागुलांबा' श्रीकृष्णदेवराय की माँ थी। यह एक संयोग था कि ये नाम समान थे। वेदनारायण के लिए एक मंदिर होना चाहिए था। यह एक जगह है जो समुद्र के करीब है। इतिहास के अनुसार अवतार में विश्वास रखना चाहिए। क्यों नहीं वेदनारायण के मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। महान सम्राट ने मंदिर को फिर से बनाने का फैसल किया। उन्हें यह भी विश्वास था कि वेदनारायण की मूर्ति को स्थापित करने का मौका देने के लिए यादव नारायण की छवि को तोडा गया था।

श्रीकृष्णदेवराय हरिदास से परामर्श किया जो क्षेत्रीय प्रमुख थे। यह क्षेत्रीय प्रमुख अविरि (दि) कलप्पार तिरुवेंगडा मुदैयन जिसका नाम अनाइतला गुकंडा

हरिहरसर था, उसने इसके बारे में सोचा और सम्राट से मिला। यह एक संयोग है कि श्रीकृष्णदेवराय की माता का नाम नागुलांबा था। इसलिए हरिहरसर ने सम्राट से कहा- ''आपके पिता ने अपनी पत्नी नागुलांबा के नाम पर हंपी में नागलापुरम का निर्माण किया। आप को अपनी माता के नाम पर 'नागलापुरम' शहर का निर्माण करना चाहिए और एक भव्य मंदिर का निर्माण करना चाहिए। यह वर्ष १५१७ इसवीं में हुआ था।

जब एक राजा चाहता है तो धन की कमी कहाँ होती है? मंदिर का निर्माण भव्यता के साथ शुरू हुआ। हजारों मूर्तिकारों ने काम करना शुरु कर दिया। निर्माण के लिए एक बार में धन की आवश्यकता नहीं थी तो, इस में से कुछ किसानों को दिया गया था। यह सोचा गया था कि फसलों को उगाएँगे और जरुरत पडने पर पैसे वापस देंगे, दोनों की सेवा करेंगे, एक तरफ खेती होगी और डेयरी (दुग्ध उत्पादन) विकसित होगी और दुसरी तरफ मंदिर का निर्माण एक साथ होगा। बिना किसी रुकावट के करीब दस साल तक काम चला।

मंदिर को सात प्राकारों में यानी बाड़ो के भीतर बारह एकड जमीन पर बनाने की योजना थी। फिर यहाँ पाँच पर आगया और आखिरकार मंदिर के चारों ओर तीन बाडे बनाए गए। पहले प्रकार पर चार तरफ चार मीनारों की योजन बनाई गई थीं। कई मूर्तियाँ गढी गई। कई और पूरे होनेवाले थे। निर्माण अचानक बंद हो गया।

श्रीकृष्णदेवराय का एक ही पुत्र था जिसका नाम तिरुमलराय था। तिरुमलराय का निधन बचपन में ही हो गया था। बेटे के उदय

के लिए सम्राट की महत्वकांक्षा ने साम्राज्य में अपनी रुचि को कम कर दिया। वह सम्राज्य को छोड़ना चाहता था। इसलिए उन्होंने चन्द्रगिरि से सम्राज्य का शासन संभालने के लिए अच्युतराय को आमंत्रित किया। इन परिस्थितियों में वे हरिदास से यह सुनकर चुप रह गए कि नागलापुरम में मंदिर निर्माण बंद हो गया है और किसानों को इसका श्रेय बुरा हो गया हैं। श्रीकृष्णदेवराय ने हरिदास से पूछा कि क्या अपने हाथ में कोई पैसा बचा है, जिस पर सम्राट ने उससे कहा कि- यह सब भगवान की हुंडी में डाल दो और उसके हाथ धोलो। हरिदास उनकी बातों से चकित और स्तब्ध रह गया। इस तरह का संदेश जो उन्हें एक शक्तिशाली राजा से मिला। लेकिन उसे सारा काम दूर रखना पड़ा।

एक तरफ विघ्नेश्वर की मूर्ति और दूसरी तरफ विष्णु दुर्गा की मूर्ति इस मंदिर के पहले द्वार के रखवाल के रुप में खडे थे। दुसरे द्वार पर केवल द्वार-१ द्वारपाल था और आयिरी द्वार पर मणिअद और दूसरे की संध्या की आकृति थी। द्वार के रखवालों के रूप में पुरुष और महिला दोनों के होने के कारण यह हो सकता है क्यों कि जो मूर्तियों गर्भगृह में खड़ी थी, वे भगवान और देवी की थीं। दूसरे प्राकृत के गलियारों में भगवान सीता रामचन्द्र लक्ष्मी नरसिंह स्वामी, वीरांजनेय स्वामी की मूर्तियाँ गढी गई। लगभग दस साल पहले पाँच धातु की मूर्तियाँ के कलश में मिली थी। ये सभी बहुत सुन्दर और मूल्यवान है। यहाँ पाए जानेवालों में बारह आल्वार, लक्ष्मीनारायण, विश्वक्सेना और कुछ लैंप पोस्टर के चित्र शामिल है।

यह बहुत दुखद है कि इस पर इतना पैसा खर्च होने के बावजूद, करियमाणक्य पेरुमाल मंदिर को दिए गए दान के बावजूद, इन सभी के बावजूद हरिगंदपुरम से आते हैं और किसानों को दिए गए सभी ऋ ण के बावजूद मंदिर का निर्माण बीच में छोड दिया गया। ऐसा माना जाता है कि यह भगवान वेदनारायण थे जिन्होंने मंदिर के बारे में अपने-सपने में श्रीकृष्ण देवराय को ठहराया था, फिर भी इस का क्या प्रभाव पडा। ज्यादा बोलने की नहीं। हालांकि, विजय नगर के वे मूर्तिकार प्रशंसनीय है, उन्होंने जो आंकडे उकेरे हैं। वेणुगोपाल स्वामी, वीणादक्षिण मूर्ति, लक्ष्मी नारायण स्वामी, त्रिमूर्ति- यह आकृति सात संगीत नोटों का निर्माण करती है, भूवराह मूर्ति, हयग्रीव, त्रिविक्रम और कई और अद्भुत हैं। यथास्थितिः सभी पत्थर की आकृतियाँ उन मूर्तिकारों के हाथों में मोम की तरह ढली हुई लगती थी और मुर्तिकारों जिस रुप में कामना की थी, उस रूप में ढल लिया। मंदिर की मूर्ति की भव्यता दूर-दूर तक ज्ञात हो जाती है और मंदिर का निर्माण पूरा हो चुका होता हैं और उपयुक्त स्थानों पर मूर्तियाँ स्थापित की जाती है। मंदिर पृथ्वी पर वैकुंठ की तरह होता है, पर ऐसा हुआ नहीं। इस के लिए धुन के बाद नीचे नहीं आया था। केवल कुछ मूर्तियाँ वहाँ खड़ी है। कुछ को ति.ति.दे. तिरुमला संग्रहालय में रखे गए। क्यों कि यह मंदिर २७, अप्रैल १९६७ की तिरुमला तिरुपति देवस्थान के नियंत्रण में आया।

जब श्रीकृष्णदेवराय ने खुद ऐसे आदेश दिए तो हरिदास क्या कर सकता है। यह केवल करियमाणिक्य पेरुमाल की मूर्ति है जिसे खंडित किया गया था जब कि रुक्मिणी और सत्यभामा दोनों में से एक को छोड दिया गया था। चूँकि एक नई मूर्ति तैयार नहीं थी, हरिदास ने एक नवनीत से एक मूर्ति को मक्खन से बनाया और उसकी पूजा की। शंख और चक्र है, लेकिन चक्र एक प्रयाग चक्र है, क्यों कि सोमकासुर सिर्फ इस चक्र से मारा गया था।

पूजा के समय भगवान के पैर गलत तरीके से धोए गए थे। उसने पैर नहीं रखने की इच्छा की और इस तरह मछली का रुप धारण किया। मछली के पास पैर नहीं है, क्या करता है रुक्मिणी और सत्यभामा को श्रीदेवी और भूदेवी में बदल दिया गया था। चूँकि वेद नारायण को अपनी पत्नी वेदवल्ली तायारु की जरूरत थी, इसलिए मंदिर के परिसर में दक्षिण-पश्चिम में एक छोटा-सा मंदिर बनाया गया था। और जब से छवि तैयार हुई देवी स्थापित हो गई। हरिदास ने उसे उसी बिंदु पर छोड दिया शेष कार्य ति.ति.दे. ने कर दिया।

चूँकि भगवान नवतीन रूप में है इसलिए उन्होंने तेल से अभिषेक उस तरीके से किया जैसा कि गोविंदराजा स्वामी केलिए किया जाता है। इसका अर्थ है कि मूर्ति पर तिल का तेल लगाया जाता है। चूंकि मूर्ति के पैर नहीं है इसलिए सुनहरे पैर बनाए गए है। जब ति.ति.दे. पद भार संभाला लिया, तीन मंजिला प्रवेश टॉवर को हटा दिया गया था। वेदनारायण स्वामी के साथ श्रीदेवी भूदेवी की छवियों को एक नए टॉवर में रखा गया। इसी तरह सभी तरफ के टॉवरों को संभव हद तक पुनर्निर्मित किया गया और मंदिर की मरम्मत की गई। हालांकि त्योहार की मूर्तियाँ श्रीकृष्ण, रुक्मिणी और सत्यभामा की हैं, लेकिन वे वेदनारायण, श्रीदेवी और भूदेवी के रूप में मानीजाती हैं। बाहरी दीवारों पर पत्थर के शिलालेख इतने बारीक नक्काशीदार है कि ऐसा लगता है जैसे वे मूद्रित हैं।

मंदिर का मुख पश्चिम की ओर है। मंदिर के सामने नतो गरुडलवार और नहीं हनुमान दिखाई देते हैं। इसके बजाया, सूर्यदेव-सूर्यदेव की पूजा यहाँ पाँच दिनों तक की जाती है, जो चौबीस मार्च से अट्ठाईस वे तक होते है। दोपहर चार और पाँच बजे होने वाले सूर्यसेवा केलिए न तो ध्वजस्तंभ और न ही बलिपीठ बाधा के रुप में खड़े होते है। असंख्य भीड़ इस स्थान पर झुंड में सूर्योदय की पूजा देखने के लिए आते है। पहले दो दिनों में वेद नारायण के चरणों को छूते हैं, फिर नाभि को और अंतिम दो दिनों में- माथे को पहले दिन नाव उत्सव सेवा भगवान राम-सीता के साथ श्री रामचन्द्र स्वामी केलिए होती है, और दुसरे दिन से पाँचवे दिन तक श्रीवेदनारायण स्वामी और श्री वेदवल्ली के रुप में। इधर भी ब्रह्मोत्सव मनातेः है। जो सेवाएँ तिरुमला में की जाती है, उसी प्रकार इधर भी किया जाता है। लेकिन ब्रह्मोत्सव में स्वर्ण रथ का कोई उत्सव का आयोजन इधर नहीं है। मत्स्य जयंती भी यहाँ भव्य तरीके में मनाई जाती है। चोल शासन के अंतिम चरण के दौरान यादव राजाओं ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की नेल्लूर और चित्तूर के वर्तमान जिलों में के क्षेत्रों पर शासन किया। उन्होंने गोविदराजा स्वामी मंदिर में पार्थ सारथी अंडाल मंदिर में पूजा की। तिरुचानूर में बलरामकृष्ण, श्री पद्मावती मंदिर, वेणुगोपालस्वामी कार्वेटिनगरम, नागलापुरम, यादव नारायण स्वामी मंदिर में और अन्य मंदिरों में भी पूजा की।

तिरुकलट्टि देवय्या देवरायर अपने पुत्र को, जब कि तिरुचानूर को देवता को उपहार के रूप में दिया था। तिरुवेंकटनाथ यादवरायलु ने तिरुपति को दान दिया। उनके द्वारा निर्मित सभी मंदिरों में नागलापुरम मंदिर में ही यह हुआ था कि यादव नारायण वेद नारायण बन गए।

❁❁❁

अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस एवं नारी जागरण

डॉ.आर.गायत्रि
मोबाइल - ९४९०८३७२८०

यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः।।

समाज में स्त्री का महत्वः

भारतीय समाज के प्रारंभ से ही स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष के समान कार्यभार संभालती रही है। नारी के सहयोग, साहचर्य तथा सन्निकट रहकर ही पुरुष जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। नारी वह वस्तु है, जो सुख और दुःख दोनों परिस्थितियों में पुरुष के जीवन को सफल एवं सार्थक बनाते हुए उस की रक्षा करती है।

डॉ.राधाकृष्णन ने कहा- ''नारी नर की सहचरी, उस के धर्म की रक्षक, उस की गृहलक्ष्मी तथा उसे देवता तक पहुँचानेवाली होती है।'' इस अर्थ में वह एक ऐसी इकाई है जो पुरुष को पूर्ण इकाई बनाती है। वह पुरुष को जीवन दान देती है। वस्तुतः स्त्री और पुरुष दोनों सृष्टि के मूलाधार है। एक दूसरे के पूरक है। एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा हो जाता है। अतः दोनों का समान अस्तित्व है।

समाज में स्त्री की स्थितिः

वैदिक काल से लेकर आज तक स्त्री के रूप में अनेक बदलाव आए हैं। वह हर युग में विभिन्न परिस्थितियों से गुजरती रही है। हर नये दौर में नयी-नयी समस्याएँ और नये-नये समाधान उस के सम्मुख आते रहे हैं। समाज में स्त्रियों की स्थिति मान्यताएँ, परंपरागत मूल्यों, आदर्शों के अनुसार निश्चित की जाती है।

समाज में स्त्री को व्यक्ति के रूप में नहीं वस्तु के रूप में माना गया है, कार्येषु दासी, करणेषु मंत्री, भोज्येषु माता, शयनेषु रंभा, रुपेषु लक्ष्मी, क्षमया धरित्री षट्कर्मयुक्ता 'कुल धर्म पत्नी' कहकर प्राचीन काल से आज तक स्त्री को एक दायरे में सीमित रखने की परंपरा को अपनाते हुए नजर आता है। सदियों से स्त्री को स्व पहचान व सम्मान नहीं दिया गया है। समाज की अधिकांश मान्यताएँ पुरुषों के द्वारा निर्मित होने के कारण स्त्री के प्रति स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता नहीं मिली। इस संघर्षमय स्थिति में महिला आंदोलन की आवश्यकता का जन्म दिया। महिलाओं के जीवन सुधार केलिए विश्व भर में कई आंदोलन चलाए गए। इस प्रकार के आंदोलन आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की कारण बनने में सफल हुई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास :

सर्व प्रथम साल १९०८ में २८ फरवरी को करीब १५ हजार महिलाओं ने अमेरिका के न्यूयार्क शहर में मार्च निकाल कर नौकरी में कम घंटों, पुरुष के समान वेतन और वोट करने के अधिकार केलिए विरोध प्रदर्शन किया था। ठीक इस के एक साल बाद सोशलिस्ट पार्टी आफ अमेरिका ने इसी दिन को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर दिया।

प्रसिद्ध जर्मन एक्टिविस्ट क्लारा जेटकिन के जोरदार प्रयासों के फलस्वरूप ईंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस ने साल १९१० में महिला दिवस के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप दिया। इस के फलस्वरूप १९११ को पहला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आस्ट्रिया, डेनमार्क और जर्मनी में आयोजित किया गया। साल १९२१ में महिला दिवस की तारीख को ८ मार्च कर दिया गया। साल १९१७ में पहले विश्व युद्ध के दौरान रूस की महिलाओं ने ''ब्रेट एंड पीस'' (यानी खाना और शांति) की मांग की। महिलाओं की डडताल ने वहाँ के सम्राट निकोलस को पद छोडने केलिए मजबूर कर दिया और अंत में सरकार ने महिलाओं को मतदान का अधिकार दे दिया। उस समय रूस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगेरियन कैलेंडर के। इन दोनों की तारीखों में कुछ अंतर है।

अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आमंत्रण पर यह दिवस सब से पहले २८ फरवरी १९०९ को मनाया गया। इस के बाद यह दिवस फरवरी के आखिरी इतवार के दिन मनाया जाने लगा। १९२० में सोशलिस्ट इंटरनेशनल के कोपेनहेगन सम्मेलन में इसे अंतर्राष्ट्रीय दर्जा दिया गया। उस समय इस का प्रमुख ध्येय महिलाओं को मत देने का अधिकार दिलवाना था। चूँकी उस समय अधिकांश देशों में महिलाओं को मत देने का अधिकार नहीं था। अधिकारिक तौर पर इसे मनाने की शुरुआत १९७५ में संयुक्त राष्ट्र ने शुरु किया। हर वर्ष ८ मार्च को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियाँ एवं कठिनाइयों की सापेक्षता के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक दिवसीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल ८ मार्च दुनियाभर में मनाया जाता है। जिस में महिलाओं के विकास, सम्मान और अधिकारों के बारे में बात की जाती है और स्कूल से लेकर कॉलेजों में तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। उस दिन को खास बनाने केलिए उन्हें उपहार भी दिए जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का मुख्य उद्देश्य :

खासकर महिला दिवस महिला विकास केलिए महत्वपूर्ण दिवस है। संयुक्त राष्ट्र हर वर्ष ८ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया है। महिलाओं के आत्मनिर्भर बनाने व उन की उपलब्धियों का सम्मान करने केलिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह दिवस मनाया जा रहा है। महिलाओं के मूल्य एवं महत्व को जानते हुए आत्म निर्भर बनाना इस का मुख्य उद्देश्य है। जीवन के हर क्षेत्र में उन को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। कहने केलिए महिलाओं को कई कानूनन सुविधाएँ दी गयी हैं किंतु अनुभव के धरातल पर ये सब सुविधाएँ उन को प्राप्त नहीं है। आज का नव समाज भी उन को नजर अंदाज से देख रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस से रंगों का सम्बंध :

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस से कुछ रंगों का संबंध जुडी हुई है। जिस प्रकार हमारे जीवन में रंगों का महत्वपूर्ण स्थान एवं संदेश रहता है उसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी तीन रंगों से संबंध रखती हुई हमें संदेश देती है। ये तीन रंग है - बैंगनी, हरा और सफेद।

बैंगनी रंग न्याय और गरिमा का सूचक है। हरा रंग उम्मीद का रंग हैं। सफेद रंग को शुद्धता का सूचक माना गया है। ये तीनों रंग ब्रिटेन की विमेंस सोशल एंड पॉलिटिकल यूनियन ने तय किया था।

भारत में महिलाओं की दशा और दिशा :

भारत में भी १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में नारी की भूमिका कुछ कम नहीं हैं। भारतीय नारी मुक्ति का संघर्ष १९वीं शताब्दी से ही आरंभ हुआ है। मनुष्य उन्नत स्थिति तभी प्राप्त कर सकता है जब वह निरंतर संघर्षरत तथा प्रयत्नशील है। स्त्री अपनी जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न समस्याओं का सामना कर रही हैं। मानसिक संघर्ष का अनुभव करती आ रही है। उन के प्रति अन्याय और अत्याचार की यह परंपरा बहुत प्राचीन है। फिर भी परन्तु सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीति रिवाज, सामाजीकरण की प्रक्रिया, रूढिवादि पद्धतियों के फलस्वरूप पुरुष स्त्रियों को निम्न स्थिति में ही समझते हैं। वे यह भी मानकर चलते हैं कि स्त्रियाँ बुद्धि व शक्ति में उन से हीन है। फिर भी आज की स्त्री आधुनिक एवं चेतना जागी है। स्त्रियों की स्थिति में विभिन्न प्रकार के उन्नति होते हुए भी आज की स्त्री शोषण व अत्याचार का शिकार बनी हुई है। देश में सर्वत्र जहाँ भी जाँचें स्त्री के प्रति अत्याचार व लैंगिक शोषण की घटनाएँ दिन ब दिन बढती ही जा रही है।

महिलाओं के प्रति ऐसा क्यों हो रहा है? इस के जिम्मेदार कौन है? मात्र महिला दिवस के अवसर पर उन्हें सम्मान दिया जाता है, बाकी दिनों में उन के प्रति अन्याय, अत्याचार, बलात्कार, हत्याएँ आम हो चुकी हैं। ऐसी यातनाओं से उन को कैसे बचाएँ? उन की रक्षा का प्रबंधन कैसे किया जाय ता कि वे पुरुषों के समान अपने अधिकारों को सही मायने में अनुभव कर सकें। अपनी शक्ति, प्रतिभाओं का सही निर्वहण कर सके। किंतु वर्तमान समाज में नारी का स्थान बहुत गिरा हुआ पाया जाता है। आज वह भोग की वस्तु बनी हुई हैं। उस का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है। फिर उसे बेकार वस्तु की तरह देखते हैं। असुरवादी संस्कृति अर्थात् ''उपयोग करो छोड दो'' की भाँति उस की स्थिति दयनीय बन गयी है। उस स्थिति में उस का उद्धार कैसे किया जाय? उस के जीवन को कैसे सुधारा जाय? सही अर्थों में उस के जीवन को सुखमय कैसे बनाया जाय? इस की जिम्मेदारी किस की है? आदि तथ्यों पर विचार करने केलिए इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। महिलाएँ समाज में, राजनीति में और अर्थ शास्त्र में कहाँ तक पहुँची है? इस के उत्सव के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय

मध्यवर्ग की आधुनिक स्त्रियों ने शिक्षा के हर क्षेत्र में आगे बढने लगी। व्यवसाय के हर क्षेत्र में भी पुरुष के समान नौकरी करते हुए स्वावलंबी बनने की प्रयास कर रही है। राजनीतिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में सहभागिनी बनकर उत्साह एवं विवेचन से आगे बढ रही हैं। इतने होते हुए भी स्त्री ने घर और बाहर दोनों जगहों पर संतुलन बिठाने की प्रयास की है।

महात्मा गाँधी जी कहा करते थे कि जब एक स्त्री इस देश में आधी रात स्वतंत्र रूप से मनमानी चल सकेगी तब ही इस देश पूर्ण रूपी स्वतंत्र होगी। जब तक स्वतंत्र भारत में महिला स्वतंत्र व सुरक्षित जीवन जी नहीं सकेगी। ऐसी हाल में महिलाओं पर चल रहे ये अत्याचारों के विरुद्ध आंदोलन चलाने का जिम्मेदारी हम सब पर होता है।

महिला दिवस का आयोजन होता है। महिलाओं के साथ होनेवाली असमानताओं को लेकर जागरुकता बढाने केलिए भी यह एक जबरदस्त माध्यम है।

महिला दिवस की उपलक्ष्य में हम सब मिलकर वैश्वीकरण के धरातल पर समाज में चेतना जागृत करके महिलाओं के अमानवीय परिस्थितियों में सुधार लाने की खसम खाएँ। सुरक्षित एवं समुन्नत महिला नव समाज का निर्माण में हर एक महिला एक सुदृढ़ ईंट बनें। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के माध्यम समाज में प्रेरणा व चेतना जगाने की प्रयास करें।

वर्तमान महिला का जो दयनीय स्थिति नजर आ रहा है, उस में महिला का हर जगह अपमान होता नजर आता है। नारी को भोग की विलास वस्तु मानी जा रही है। उसे हर तरीकें से इस्तेमाल करते देखा जाता है। यह विचार विश्लेषणात्मक तथ्य है। नारी का सम्मान किस तरह बनाए रखें? आज समाज में सभी क्षेत्रों में (पुरुष वर्चस्ववाला क्षेत्रों में भी) महिलाएँ साहस एवं आत्मविश्वास से पुरुष के बराबर कार्यरत हैं। फिर भी पुरुष एवं स्त्री के स्थानों में समानता नजर नहीं आती है।

कई लोगों का मानना हैं कि समाज में लिंग अंतर मौजूद है और व्यक्तियों द्वारा किये गये प्रयास पर्याप्त नहीं है और लिंग अंतर में कोई बदलाव नहीं ला सकते हैं। महिला दिवस समाज को यह तजुर्बा दिलाने के बारे में हैं कि हर मनुष्य को सोच समझकर प्रत्येक तरीके से कार्य करना होगा ता कि समाज को बेहतर भविष्य की ओर बदलना होगा। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आज समाज में स्त्रियों के प्रति घटित अत्यायारों एवं अमानवीय घटनाओं के बारे में गंभीरता से सोचना समुचित है। प्राचीन काल से महिला को विवक्षा एवं उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा रहा है। स्त्री

को पुरुष के बराबर कहते हुए वास्तविकता से दूर उसे निम्न दर्जा में ही रखना सोचनीय विषय है। इस बात पर भी विचारना समुचित होगा।

आज सभी कार्य क्षेत्रों में महिलाएँ अपनी कौशल एवं दक्षता से उन्नति प्राप्त कर रही है। सारे विश्व में महिलाओं का यही हाल है। यह देखकर हमें हर्ष होना तो स्वाभाविक है। परंतु स्त्री को आदर और सम्मान प्राप्त होना सपना ही रह गया है। इस प्राकृतिक मानवाधिकार केलिए हर औरत को दृढ एवं अटूट इरादे के साथ लडना चाहिए। इस लडाई में किसी भी प्रकार के ठहराव या विश्राम के बारे में सोचना नहीं चाहिए। हम सब लैंगिक भेदभाव और असमानता को चुनौती दे सकाते हैं। हम सब मिलकर महिलाओं की सुविधाएँ, उपलब्धियों का समारोह मना सकते हैं। वैश्वीकरण के तौर पर हम सब एक समावेशी दुनिया बनाने में पूर्ण योगदान दे सकते हैं।

महिला दिवस का औचित्य तब तक प्रामाणित नहीं होता जब तक की सच्चे अर्थों में महिलाओं की दशा नहीं सुधरती?

वस्तुतः भारतीय समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। किंतु बदलती हुई परिस्थितियों का सीधा प्रभाव नारी जीवन पर देखा जा सकता है। युगीन परिस्थितियाँ सदैव एक समान नहीं रहती। इसलिए नारी जीवन का स्वरूप बदलती परिस्थितियों के सापेक्ष्य में बदलता या विकसित होता रहता है। जीवन के व्यापक अनुभव और विस्तृत जानकारी के बल पर आज की नारी भी चेतना संपन्न बन पडी है। वह अपनी शक्तियों और सीमाओं को खूब समझने लगी है। परिस्थितियाँ समय के साथ बदलती जाती है और उन्ही के साथ समाज तथा नारी का रूप भी बदलता जाता है। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हुई है, फिर भी समस्याएँ घेर लेती हैं। इन समस्याओं सुलझाने व सुधारने केलिए उसे आये दिन संघर्ष करना पडता है। इन समस्याओं को निपटाने केलिए उसे सांत्वना देने की आवश्यकता है। जब पूरुष समाज उसे सहयोग देता है तब उस की सारी समस्याएँ आसानी से सुलझ जाती है। इस प्रकार नारी एवं पुरुष के सह अस्तित्व व सह भागिता मानव जीवन को सार्थक व सुखमय बना सकता है। अतः समाज में नारी जीवन के प्रति स्वस्थ संवेदनशील एवं सद्भावनापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। यह अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की सब से बडी उपादेयता कही जा सकती हैं।

❁❁❁

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)

FORM IV

See Rule 8

1.	Place of Publication	: TIRUPATI
2.	Periodicity of its Publication	: Monthly
3.	Honorary Editor	: **Dr.K.S.Jawahar Reddy,** I.A.S., Executive Officer, TTD
4.	Printer's Name	: **Sri P.Ramaraju,** M.A.,
	Whether citizen of India	: Yes
	Address	: Special Officer (Publications and Press) T.T.D., Tirupati.
5.	Editor & Publisher's Name	: **Prof. K.Rajagopalan,** Ph.D.,
	Whether citizen of India	: Yes
	Address	: Chief Editor(i/c), Sapthagiri, T.T.D. Journal, Tirupati.
6.	Name and address of individuals who own the Newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the Total Capital	Board of Trustees represented by the Executive Officer on behalf of T.T.D., Tirupati

I, K.Rajagopalan, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2021

(Sd/-) Prof.K.Rajagopalan
Signature of the Publisher

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल स्वामी जी का
प्लवोत्सव
२४-०३-२०२१ से २८-०३-२०२१ तक

श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ विकृत्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ विभूत्यै नमः
ॐ सुरभ्यै नमः
ॐ परमात्मिकायै नमः
ॐ वाचे नमः
ॐ पद्मालयायै नमः १०

ॐ पद्मायै नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ हिरण्मय्यै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः

ॐ नित्यपुष्टायै नमः
ॐ विभावर्यै नमः २०

ॐ अदित्यै नमः
ॐ दित्यै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ वसुधारिण्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कामाक्ष्यै नमः
ॐ क्रोधसम्भवायै नमः
ॐ अनुग्रहपरायै नमः ३०

ॐ बुद्धये नमः
ॐ अनघायै नमः
ॐ हरिवल्लभायै नमः
ॐ अशोकायै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
ॐ धर्मनिलयायै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ लोकमात्रे नमः ४०

ॐ पद्मप्रियायै नमः
ॐ पद्महस्तायै नमः
ॐ पद्माक्ष्यै नमः
ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
ॐ पद्मोद्भवायै नमः
ॐ पद्ममुख्यै नमः
ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ पद्ममालाधरायै नमः
ॐ देव्यै नमः ५०

ॐ पद्मिन्यै नमः
ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
ॐ पुण्यगन्धायै नमः
ॐ सुप्रसन्नायै नमः
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ चन्द्रवदनायै नमः
ॐ चन्द्रायै नमः
ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
ॐ चतुर्भुजायै नमः ६०

ॐ चन्द्ररूपायै नमः
ॐ इन्दिरायै नमः
ॐ इन्दुशीतलायै नमः
ॐ आह्लादजनन्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शिवकर्यै नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ विमलायै नमः
ॐ विश्वजनन्यै नमः ७०

ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ शुक्लमाल्यांबरायै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ बिल्वनिलयायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः ८०

ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ उदाराङ्गायै नमः
ॐ हरिण्यै नमः
ॐ हेममालिन्यै नमः
ॐ धनधान्यकर्यै नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः
ॐ शुभप्रदायै नमः
ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः ९०

ॐ वसुप्रदायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
ॐ समुद्रतनयायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ मंगळा देव्यै नमः
ॐ विष्णुवक्षस्स्थलस्थितायै नमः
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः १००

ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः
ॐ नवदुर्गायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः १०८

॥ इति श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

१३-०२-२०२१ को तमिलनाडु, चेन्नै के टी.नगर में श्री पद्मावती माता के नूतन मंदिर निर्माण की भूमि पूजा में भाग लेते हुए श्री श्री श्री विजयेंद्र सरस्वती स्वामी जी और ति.ति.दे. न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी तथा ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी जी, आई.ए.एस.।

२२-०२-२०२१ को तमिलनाडु के उलंदूरुपेट में श्री वेंकटेश्वर स्वामी जी के नूतन मंदिर निर्माण की भूमि पूजा में भाग लेते हुए तमिलनाडु के मुख्यमंत्री माननीय श्री ई.के.पलनिस्वामी जी और ति.ति.दे. न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी।

२७-०२-२०२१ को ति.ति.दे.न्यास मंडली पदेन सदस्या के रुप में डॉ.जी.वाणी मोहन जी, आई.ए.एस., आं.प्र.देवादायशाखा प्रधान सचिव ने प्रमाण स्वीकार किया। प्रमाण स्वीकार के बाद श्री वेंकटेश्वरस्वामी जी के चित्रपट को प्रदान करते हुए तिरुमल अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी।

१६-०२-२०२१ को श्री पोट्टी श्रीरामलू नेल्लुरु जिले में संपन्न वसंत पंचमी सरस्वती पूजा के संदर्भ में भाग लेते हुए ति.ति.दे.न्यास मंडली अध्यक्ष, ति.ति.दे.कार्यनिर्वहणाधिकारी और उच्च पदाधिकारी गण।

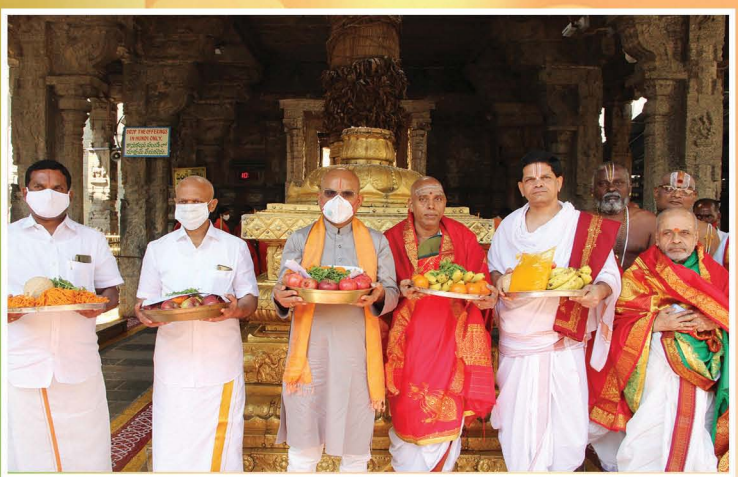

१७-०२-२०२१ को ति.ति.दे. की ओर से आयोजित कल्याणमस्तु मुहूर्त निर्णय कार्यक्रम में भागलिए ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी जी, आई.ए.एस., ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी और प्रो.हेच.डी.पी.पी. के सचीव श्री राजगोपालन जी ने भाग लिया।

११-०२-२०२१ को श्री पुरंधरदास १७४ के आराधना महोत्सव के संदर्भ में अलिपिरी में स्थित श्री पुरंधरदास विग्रह को संपन्न हुआ पुष्पांजलि कार्यक्रम में दाससाहित्य परियोजन के विशेष अधिकारी श्री पी.आर.आनंदतीर्थाचार्य जी और भजन मंडली के सदस्य ने भागलिया।

कपिलतीर्थ

- डॉ.के.एम.भवानी
मोबैल : ९९४९३८०२४६

'शिवाय विष्णु रूपाया शिव रुपाया विष्णवे'

कलियुग वैकुंठ से प्रसिद्ध वैष्णव क्षेत्र तिरुपति में 'कपिलतीर्थम' मशहूर शैव मंदिर है। मंदिर के साथ-साथ यहाँ के प्रकृति की रमणीयता भक्तों को भक्ति के साथ आनंद और उत्साह में डुबो देती है। तिरुपति से तिरुमला जाने वाले रास्ते में यह मंदिर स्थित है। भविष्योत्तर पुराण, वामन पुराण, वेंकटाचल महत्व आदि ग्रंथों में कपिलतीर्थम के बारे में वर्णन है।

तिरुमला से शिव का संबंध :

तिरुमला क्षेत्र का क्षेत्रपालक भगवान शिव है। पद्मावती-श्रीनिवास के विवाह संपन्न होने में शिव ने ही मुख्य भूमिका निभाया था। शिव के सलाह से ही श्रीनिवास ने कुबेर से ऋण लेकर पद्मावती से शादी कर ली। माना जाता है कि कुबेर को दिया गया ऋण पत्र पर ब्रह्मा और अश्वथ वृक्ष के साथ तीसरा गवाही के रूप में शिव का हस्ताक्षर भी है।

मंदिर की कहानी :

माना जाता है कि कृत युग में कपिल नामक ऋषि ने पाताल लोक में अपने एक आश्रम की स्थापना करके, वहाँ एक अद्भुत शिव लिंग की प्रतिष्ठा करके, हमेशा भगवान शिव की घोर तपस्या में मग्न रहता था। कुछ समय के बाद वह अद्भुत लिंग ऊपर बढ़ते हुए अंत में भूमि को चीरते हुए वेंकटाचल क्षेत्र में लिंग रूप में अवतरित हुआ। लिंग को और बढ़ने नहीं देने के लिए विष्णु गोपाल बनकर, ब्रह्मा कपिल गाय का रूप धारण करके क्षीराभिषेक करते हुए दोनों ने कई तरह से शिव की प्रार्थना की। तब यह लिंग स्थिर बनकर खड़ा रहा। कपिल महामुनि के द्वारा पूजा जाने के कारण से यह ईश्वर लिंग 'कपिलेश्वर' कहलाया गया। पश्चिम दिशा की ओर से दर्शन देनेवाला यह कपिल लिंग को 'सद्योजात मूर्ति' भी कहते हैं। इसका अर्थ है कि- 'तुरंत चाह पूरा करने वाला।'

पातालोत्पितलिंगेशा वृषभ ध्वज हे प्रभो।
कामाक्षी वल्लभोतिष्ट जगतां मंगलं कुरु।।

पितृ तर्पण का रिवाज़ :

कपिल तीर्थम पुष्करिणि में नहाकर जो भी अपने बुजुर्गों को तर्पण करेगा, वह पितृ देवता ऋण से मुक्त होगा। कोई कारणवश ठीक से पितरों के श्राद्ध कर्म नहीं किया या बीच में छोड़ कर पितृ देवताओं के शाप ग्रस्त लोग अगर यहाँ पितृ कार्य करेगा तो उन दोषों से मुक्ति पाएँगे। इसीलिए आजकल भी महालाय पक्ष के दिनों में, अमावस्या के दिन, उत्तरायण-दक्षिणायण के समय, ग्रहण के समयों पर बहुत लोग पितरों को तर्पण करते दिखते हैं।

कपिल महामुनि पूजित लिंगम
सकल सुरासुर वंदित लिंगम
भुविजन रक्षण कारण लिंगम
नमत महा कपिलेश्वर लिंगम।।

ऐतिहासिकता :

इतिहास के अनुसार यह मंदिर हजारों साल पुराना है। ग्यारहवीं शताब्दी में शैव मतावलंबी राजेन्द्रचोल ने इस मंदिर का निर्माण बहुत श्रद्धा और भक्ति के साथ किया था। वैष्णव मत प्रचलन के समय वैष्णव मतावलंबी विजयनगर के राजा अच्युत रायाल ने इस तीर्थ का नाम ''सुदर्शन चक्र तीर्थ'' के रूप में किया। उतना ही नहीं, इस पुष्करिणि के चारों ओर सुदर्शन चक्र की शिला यंत्रों की स्थापना करवाया। तब से यह तीर्थ 'आलवार तीर्थ' के नाम से भी पुकारा जाने लगा था।

यहाँ भगवान शिव के मंदिर के बगल में कामाक्षी माता का मंदिर भी है और काशी विश्वनाथ लिंग, सहस्र लिंगेश्वर, उमा महेश्वर, राम लिंगेश्वर, शिव सूर्य स्वामी, श्री चंडिकेश्वर स्वामी, श्री दक्षिणा मूर्ति, श्री कालभैरव स्वामी, श्री सुब्रह्मण्येशवार स्वामी, महाशास्ता, नवग्रह मंडप, श्री अगस्त्येश्वर स्वामी, लक्ष्मी नारायण मंदिर, गणेश, श्री रुक्मिणी, सत्यभामा सहित श्री वेणु गोपाल स्वामी का मंदिर आदि अन्य देवताओं के मंदिर भी हैं।

सोम स्कंद मूर्ति :

स्वयंभु कपिलेश्वर के प्रधान उत्सव मूर्ति (कल्याणोत्सव, ब्रह्मोत्सव और जुलूस आदि के समय पूजा जानेवाली चल मूर्ति) को ही सोम स्कंद मूर्ति कहा जाता है। पत्नी उमा देवी और पुत्र स्कंद के साथ हमेशा मिलकर एक ही आसान में विराजमान रहनेवाला शिव होने के कारण उसे सोम स्कंद मूर्ति कहा जाता है।

मंदिर में मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सव :

यहाँ हर सोमवार शाम को डोलोत्सव (झूला उत्सव) मनाया जाता है। हर मास में मास शिवरात्रि (महीने के कृष्ण पक्ष के चतुर्दशी) के दिन कामाक्षी कपिलेश्वर का विवाहोत्सव मनाया जाता है। हर साल शरत ऋतु में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से लेकर दशमी तक देवी नवरात्रियाँ मनाया जाता हैं।

अन्नाभिषेक :

सौरमान के अनुसार हर साल तुला मास की पूर्णिमा के दिन कपिलेश्वर (मूल मूर्ति) को अन्नाभिषेक किया जाता है। इसे कपिल तीर्थ मुक्कोटी के नाम से भी बुलाते है।

कार्तिक दीपोत्सव :

हर साल कार्तिक मास में कृतिका नक्षत्र के दिन शाम के समय बड़े धूम-धाम से कृतिका दीपोत्सव मनाया जाता है।

तेप्पोत्सव :

हर साल मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक तीन दिन शाम के समय ये उत्सव मनाये जाते हैं।

श्री कामाक्षी माँ की चंदनालंकार :

हर साल चंद्रमान के अनुसार पौष्य मास की पूर्णिमा के पहले आनेवाले शुक्रवार को माँ की मूल मूर्ति को ही करने वाले विशेष पूजा चंदनोत्सव है।

ब्रह्मोत्सव :

हर साल महा शिवरात्रि (माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी) के अवसर पर यहाँ बहुत धूम-धाम से ब्रह्मोत्सव दस दिन मनाया जाता है। प्राचीन काल में ये उत्सव पाँच दिन ही मनाते थे, लेकिन कालांतर में ये उत्सव अन्य मंदिरों के ब्रह्मोत्सव की तरह दस दिन मनाने लगे। ये उत्सव पहले ध्वाजारोहण से शुरू होता है। हर दिन सुबह शाम हंस, सूर्य प्रभा, चन्द्र प्रभा, अश्व, गज, भूत, सिंह, मकर, शेष कल्पवृक्ष आदि वाहनों पर मंदिर के आस पास की गलियों में स्वामी का जुलूस निकलता है। सबसे पहले दिन की रात के समय हंस वाहन, दूसरे दिन सुबह सूर्य प्रभा वाहन, रात को चंद्र प्रभा वाहन, तीसरे दिन सुबह भूत वाहन, रात को सिंह वाहन, चौथा दिन सुबह मकर वाहन, रात को शेष वाहन, पांचवाँ दिन सुबह नंदी वाहन उत्सव, छठवाँ दिन व्याघ्र वाहन, रात को गज वाहन, आठवाँ दिन सुबह कल्पवृक्ष वाहन, रात को तिरुच्चि उत्सव, नौ वाँ दिन सुबह रथोत्सव, रात को नंदी वाहन, दसवाँ दिन सुबह पुरुषामृग वाहन, रात को कल्याणोत्सव, बाद में अश्व वाहन, ग्यारहवाँ दिन सुबह सूर्य प्रभा वाहन में नटराज मूर्ति का जुलूस, रात को रावणासुर वाहन और ध्वाजानरोहण से ये उत्सव समाप्त हो जाता है।

त्रिशूल स्नान :

ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन यानी फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन कपिल तीर्थ पुष्करिणी में त्रिशूल स्नान किया जाता है। उस समय में स्वामी, माँ कामाक्षी को एक पालकी पर, त्रिशूल को एक पालकी पर जुलूस निकालते हुए उन्हें मंदिर में लेकर आते हैं। बाद में त्रिशूल का स्वपन तिरु मंजन किया जाता है।

शिवाकांत शंभो शाशंकार्थमौले
महेशानशूलिनजटाजूटाधारिन
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्ण रूप।

❁❁❁

तुम्बुर तीर्थ

- डॉ.जी.सुजाता
मोबैल : ९४९४०६४११२

अनेक महान ऋषी, योगी, गन्धर्व, तथा देवताओं के तपोदीक्ष से समृद्ध दिव्यस्थान ही 'तीर्थ' माने जाते हैं। 'तीर्थम्' का अर्थ है 'पावनजल'। श्रीवेंकटाद्री के बीस दिव्य नामों में से एक है 'तीर्थाद्री' अर्थात् पवित्र जलस्थानों का निवास। जैसे ब्रह्मपुराण, ब्रह्मांड पुराण, वराह पुराण और अन्य कई पुराणों में वर्णन के अनुसार १,००८ प्रमुख तीर्थ तिरुमला पहाड पर हैं, जिन में से १०८ तीर्थों में श्रीवेंकटेश्वरस्वामीजी के भक्तों की मनोकामनाएँ पूरा करने की दिव्य शक्ति है। वे सारे तीर्थ मुनियों की तपस्य करने के स्थान हैं। इन में से केवल सात तीर्थ ऐसे है जो भक्तों को मोक्षानुग्रह प्रदान कर सकते है। वे हैं - १. स्वामिपुष्करिणी २. पाण्डवतीर्थ ३. पापविनाशनम् तीर्थ, ४. कुमारधारातीर्थ, ५. तुम्बुरतीर्थ, ६. रामकृष्णतीर्थ ७. आकाशगंगातीर्थ, कई तीर्थों के लिए स्थान का महत्व, पुराणों की प्रतिष्ठा, निर्दिष्ट तीर्थ मुक्कोटि आदि होती है। तीर्थों में 'तुम्बुरतीर्थ' श्रेष्ठ मानी जाती है यह तीर्थ प्राकृतिक जलस्त्रोत। में से एक है जो वैदिक युगों से है।

तिरुमल पहाड का सबसे लोकप्रिय पवित्र जलों में से एक माने जाने वाला तुम्बुरतीर्थ बालाजी मन्दिर से लगभग १२ कि.मी. और पापविनाशनम् से ७ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। 'तुम्बुर तीर्थ जाने के लिए पहले तिरुमला से आर.टी.सी.बस या दूसरे प्रकार के वाहनों से पापाविनाशनम् बाँध तक पहूँचना है, फिर वहाँ से पथरीले रास्ते से पैदल चलकर तुम्बुर तीर्थ पहूँचा जा सकता है। हर साल मार्च महीने में फलगुन पूर्णिमा के दिन भक्तों के लिए यह मार्ग खोला जाता है। केवल इसी दिन बांध के द्वार खोले जाएँगे और लोगों को बांध के दूसरी तरफ पहाड पर चढने के लिए जाने दिया जाता है। इस मौके पर बाँध पर भक्तों की बडी संख्या में आने के कारण वहाँ कोलाहल का माहौल देखने को मिलता है। तमिलनाडु कर्नाटक आन्ध्र प्रान्तों के लाखों भक्तजन इस दिन, तुम्बुरतीर्थ के पवित्र जल में स्नान करने आते हैं। बांध से जंगल में जाने के लिए भक्तों को तीन दिन तक अधिकारी अनुमति देते हैं।

पौराणिक रुप से तुम्बुरतीर्थ के बारे में विविध पुराणों में कई कथन कहे गए है। सुनने को मिलते हैं। प्राचीन काल में इस तीर्थ के लिए 'घोणतीर्थ' नाम प्रचलन में है। एक दिन महर्षि वशिष्ठ, अपने तथा अपने ब्राह्मण भक्त सर्वाभद्दुडु, दोनों के कर्मानुसार प्राप्त पापों को कम करने के लिए क्या करें, इस विषय के बारे में जानने कि लिए ब्रह्मलोक पहूँचे। वहाँ भगवान ब्रह्माजी की सलाह मान

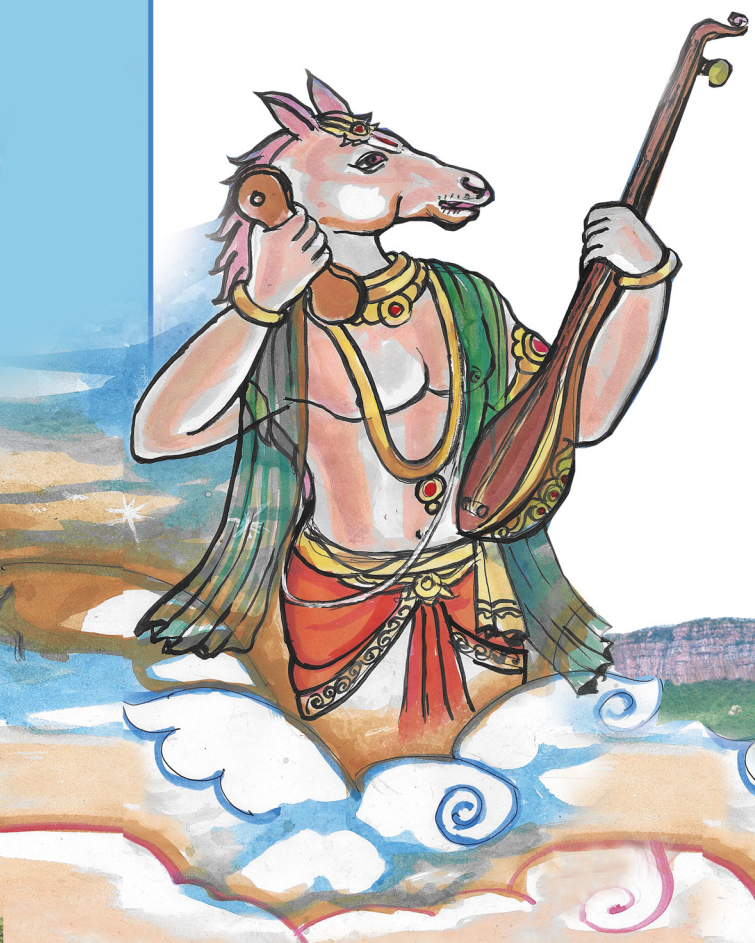

कर, वेंकटाचल में स्थित 'घोणतीर्थ' में स्नान करने के लिए आए। स्नान करते ही उनके पाप दूर हो गए। इतनी महिमान्वित स्थल है यह घोणतीर्थ। असल में इस घोणतीर्थ का नाम तुम्बुरतीर्थ बनने के पीछे किंवदंती ब्रह्मोत्तर खण्ड में बताया गया है।

प्राचीन काल में देव गायक तुम्बुरु जी ने एक मानव राजा की प्रशंसा करने के कारण, महर्षि नारद ने उन्हें शापित किया, इस कारण से तुम्बुरु ने अपना दैवत्व खोकर, घोडे के चेहरे के साथ इस घोणतीर्थ में आ गिरे। यहाँ आने के बाद, वह जगह वेंकटाचल पर्वत होने की बात जानकर अपनी शाप से मुक्ति पानेके लिए श्रीहरी जी की घोर तपस्या की परम दयालु स्वामी श्रीवेंकटेश्वर जी ने तुम्बुरु को दर्शन दिए और उन्हें शापमुक्त कर दिया। तब से यह घोणतीर्थ तुम्बुरतीर्थ के नाम से जाना जाता है। जिस दिन श्रीवेंकटेश्वर जी ने तुम्बुरु को दर्शन दिया, वह फलगुन मास के पूर्णिमा का दिन था। इसलिए भक्तों की आस्था है कि उस दिन और उस तिथि के दिन तुम्बुरतीर्थ में स्नान करने से समस्त पाप धुल जाएँगे।

स्कान्द पुराण में उल्लेख है कि तुम्बरु नामक गंधर्व की पत्नी, उनके साथ माघस्नान करने से मना कर दिया, तो वे क्रोधित होकर अपनी पत्नी को शाप दिया कि वह घोणतीर्थ में एक बरगद की पेड की छाल में मेंढक बनकर रहें। जब पत्नी ने दुःखी होकर शापमुक्ति की प्रार्थना की, तो तुम्बुरु ने कहा कुछ समय बाद महर्षि अगस्त्य जी इस घोणतीर्थ क्षेत्र में आएँगे और वे बरगद के पेड के पास अपने शिष्यों को इस तीर्थ की महत्व के बारे में बताएँगे, जिसे सुनने के बाद तुम्हारा अभिशाप दूर होगा। कालक्रम में महर्षि अगस्त्य का यहाँ पर आना, तुम्बुर तीर्थ का महत्व अपने शिष्यों को बताना, तुम्बुरु की पत्नी का अभिशाप दूर हो जाना, ये सारी घटनाएँ घटित होती है।

तुम्बुरतीर्थ तीर्थ के रास्ते में 'सनकसनंद तीर्थ आता है। पूर्व इस प्रदेश में सनकसनंदादि महर्षियों ने तपस्या

की। सनक, सनन्द, सनत् कुमार सनक् सुजात ये चारों ब्रह्म मानसपुत्र माने जाते हैं।

श्रीवेंकटेश्वर स्वामी जी की परम भक्त मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने इस 'तुंम्बुरतीर्थ' की गुफा में कई साल योग साधना करती रही। आज भी यह गुफा 'तरिगोंडम्मा गदि' (तरिगोंडा का कमरा) नाम से जानी जाती है। इनके द्वारा लिखित चेंचुनाटक नामक यक्षगान में तुम्बुरतीर्थ का उल्लेख है।

तुम्बुरतीर्थ क्षेत्र सुन्दर लताओं से, बडे बडे वृक्षों से देखने में बडा सुहावना लगता है। यह क्षेत्र वेंकटश्वर अभयारण्य का घना जंगल प्रान्त है। इस क्षेत्र में बाघ, बारहसिंगा, भालु जंगली सुअर जैसे वन्यजीव रात को घूमते हैं। पृथ्वी के विकास क्रम में कुच मिलियन साल पहले, दो भागों में विभाजित हुई एक बडा पहाड प्राकृतिक चमत्कार है। सूरज की रोशनी में, सुनहरे रंग मे चमकता हुआ इन पहाडों के बीच में से आनेवाले हवा की लहरें मानों ऐसा लगता है जैसे हमें शिला संगीत सुना रही हो। इन पहाडों के बीच में से लगभग चौथाई, किलोमीटर चलने के बाद तुम्बुरतीर्थ दिखाई देता। यह चौथाई

कि.मी. का रास्ता अत्यंत रोमांचक होने के साथ साथ खतरनाक भी है। सतर्क रहना जरूरी हैं।

यहाँ नारद जी का मंदिर देखने को मिलता है। जो १९५६ में किसी साधुद्वारा निर्मित है। इस मंदिर में नारद जी का कोई मूर्ति तो नहीं है, पर किसी भक्त के द्वारा रखा गया शिव-पार्वती के चित्रपट देखने को मिलते है। यहाँ मंदिर परिसर में छोटा शिवलिंग भी है। तुम्बुरतीर्थ जानेवाले भक्त यहाँ रुककर पूजा करते है।

पापविनाशनम् से लगभग सात किलोमीटर पैदल चलकर आए भक्तजन तुम्बुरतीर्थ देखते ही अपना सारा थकावट भूल जाते हैं। यहाँ चारों तरफ किसी गुमनाम मूर्तिकार द्वारा खुदी गई मूर्तिकला, तथा प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर भक्त पुलक्ति हो उठते हैं। पहाड से गिरनेवाले झरने के नीचे स्नान करके और भी संतुष्ट हो जाते हैं।

शापित होकर 'घोणतीर्थ' में गिरकर श्रीहरि के नामस्मरण से अभिशाप हुए, गान गंधर्व तुम्बुर जी की प्रतिमा यहाँ स्थित है। अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ में पुण्य स्नान करके, भक्तजन वहाँ पर स्थित तुम्बुरु जी का तथा पहाड के नीचे रखी गयी श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी की तस्वीरों की पूजा करके खुशी से लौट जाते है।

तुम्बुरतीर्थ के पास पेद्दक्का गुण्डम् नाम का गहरा झील देख सकते है। १९२० ई में ही यह तीर्थ बहुत मशहूर है। उन दिनों जब परिवहन की सुविधाएँ नहीं थी, फिर भी मुश्किल मेहनत से पैदल चलकर लोग इस तीर्थ यात्रा पर आते थे इस बात के प्रतीक के रुप में यहाँ की चट्टानों पर नक्काशी की गई उनदिनों के भक्तों के नाम हम दिखाई देते हैं। यहाँ आएँ भक्त, वहाँ की चट्टानों का एक के ऊपर एक रखते है। उनका मानना है कि ऐसा करने से उनकी इच्छाएँ पूरी हो जाती है।

तुम्बुरतीर्थ से लौटते समय साँप का बडा वांबी दिखाई देता है। यह बहुत प्राचीन बाँबी है। मान्यता है कि इस बांवी में देवता सर्प निवास करती है। यहाँ पर रखी लक्ष्मी देवी की तस्वीर को हल्दी, कुमकुम लगाकर भक्तजन साँप की बांबी की चारों ओर प्रदक्षिणा करते है। यहाँ राम लक्ष्मण नाम से बुलानेवाले आम के दो लम्बे लम्बे पेड भी हैं। पूर्णिमा की रात इन पेडों के नीचे दिये जलाकर भक्त जन पूजा करते हैं।

दो पहाडों के बीच पूर्णिमा का चाँद, इस तुम्बुरतीर्थ को अपनी सफेद अमृत किरणों से मानों भरने की कोशिश कर रही है, ऐसा सुन्दर दृश्य देखते ही बनता है। जब भी तुम्बुर तीर्थ में स्नान करें, या तीर्थ महिमा के बारे में सुने हमें अनंत पुण्य प्राप्त होगी, ऐसा पुराण ग्रन्थ का प्रवचन है। कहा जाता है कि बगारु बल्लि (सुनहरा छिपकली) यहीं रहते है जो सामान्य तौर पर देखने को नहीं मिलती।

सूचनाएँ :

१. तुम्बुरुतीर्थ केवल पैदल मार्ग से ही जानेवाली तीर्थ है।

२. बूढे बच्चे तथा गर्भवती महिलाओं को इस यात्रा करने की सुझाव नहीं दिया जाता है।

३. इस तीर्थ का मार्ग सालभर में केवल एक ही बार खोला जाता है। इसलिए शेष दिनों में वहाँ जाने की कोशिश न करें।

४. आपको इस जगह पर जाते समय पर्याप्त पानी की बोतल और खाना ले जाने की आवश्यकता है।

५. यहाँ पर किसी भी प्रकार की रहनेकी सुविधा या चिकित्सा की सुविधाएँ नहीं है।

६. पूरा ट्रेक (पैदल जाने का रास्ता) घने जंगल के बीच तथा चट्टानों को चढते हुए, पथरीले रास्ते से जाना पडेगा।

७. कृपया अन्य लोगों पर भरोसा न करें। ति.ति.दे. पानी तथा रस्सियों की बहुत न्यूनतम स्तर पर व्यवस्था करेगी।

८. यह सुझाव दिया जाता है कि आप आने से पहले ति.ति.दे. से संपर्क करके तारीख और अनुमति की पुष्टि करें।

इस बार कोविड (करोना) के कारण 'तुम्बुरतीर्थ' की यात्रा रद्द कर दिया है।

❁❁❁

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी

व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी

मोबाइल - ९३६४३२४८४४

श्री*शेषशैल गरुडाचल वेंकटाद्रि*

नारायणाद्रि वृषभाद्रि वृषाद्रिमुख्याम्।

आख्यां त्वदीयवसतेरमिशं वदन्ति

श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१५॥

पदार्थ -

श्री शेषशैल गरुडाचल वेंकटाद्रि

नारायणाद्रि वृषभाद्रि वृषाद्रि मुख्याम् - आदि शेषाद्रि, गरुडाद्रि, वेंकटाचल, नारायणाचल, वृषभाचल, वृषाचल आदि,

आख्याम् - नामों को,

त्वदीय वसतेः - आपके रहने के स्थान पर्वत को,

अनिशं - हमेशा,

वदन्ति - कहते हैं, श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - हे श्री वेंकटेश! यहाँ आये हुए लोग आपके वास स्थान श्री वेंकटाद्रि के कई नामों को अनवरत संकीर्तन कर रहे हैं। आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - आदिशेष ही श्रीवेंकटाद्रि के रूप में अवतार लिये है। अतः 'शेषाचल' कहा गया है। ब्रह्मण्ड पुराण के दूसरे अध्याय में, भगवान शेष को संबोधित कर कहते हैं कि ''लीला करने योग्य स्थान में वास करने की मेरी इच्छा है। नारदजी के वचन को सुने हो न। उनसे बताये स्थान में, भूलोक में तुम एक पर्वत का रूप धारण कर रहो। तुम्हारे फणों के नीचे (छाया में) लक्ष्मीजी के साथ में वास करू''। ऐसा कहने पर शेष भी वैसा ही एक पर्वत का रूप धारण कर दिये (वहीं कहा गया है)।

गरुडाचलम्-गरुडजी से लाया पर्वत। श्वेतवराह भगवान भूमि को पहले जैसे स्थापित कर लोगों को उज्जीवित कर इस धरातल में ही वास करने का विचार कर, गरुडजी से ''महाबलवान हे विनता के पुत्र जल्दी से परमपद को जाकर वहाँ रहने वाले मेरे लीला पर्वत को यहाँ लाइये'' ऐसी आज्ञा करने पर वे उस पर्वत को लाये हैं। ऐसा वराहपुराण के प्रथम भाग के द्वितीय अध्याय में कहा गया है।

वेंकटाद्रि - 'वें' यह शब्द मोक्ष को बताता है। यह बीजाक्षर है। ''कंट'' शब्द से सम्पत (सम्पत्ति) कहा

गया है। तथाच मोक्ष तथा ऐहिक व पारलौकिक सम्पत, जनताओं से प्राप्त किये जाने से वेंकटाद्रि कहा जाता है, ऐसा वराह पुराण के प्रथम भाग के चौथे अध्याय में एवं ''वें'' शब्द से समस्त पाप कहा जाता है, ''कटं'' शब्द से उसे दाह करना कहा गया है। पापों को जलाने से यह वेंकटाद्रि इस नाम से प्रसिद्धि को पाकर कीर्तिमान हो गया है।'' ऐसा भविष्योत्तरपुराण के द्वितीय अध्याय में कहा गया है। उनके अनुसार 'वेंकटाद्रि' शब्द का ये दोनों अर्थ होता है।

नारायणाद्रि - ''नारायण'' नाम का एक ब्राह्मण इस पर्वत में घोर तपस्या कर भगवान का दर्शन कर ''यह पर्वत मेरे नाम से प्रसिद्ध हो'' ऐसा वर माँगा। भगवान ने उसे स्वीकार किया। अतः यह पर्वत ''नारायणाद्रि'' हो गया है। ऐसा ब्रह्माण्डपुराण के तृतीय अध्याय में कहा गया है।

वृषभाद्रि- साधुजनों को त्रास देते रहे एक शिवभक्त वृषभ नाग का असुर एक पर्वत में अचानक अपने सामने एक व्याध के रूप में प्रकट हुए भगवान से युद्ध किया। भगवान ने चक्रायुध से उसका संहार किया। मरते समय उसने ''यह पर्वत मेरे नाम से प्रसिद्ध हो'' ऐसा वर माँगा। अतः इस पर्वत का नाम 'वृषभाद्रि' हुआ। यह वृत्तान्त ब्रह्माण्डपुराण के पाँचवे अध्याय में कहा गया है।

वृषाद्रि- 'वृष' नाम का एक 'मनु' यहाँ तपस्या किया। उसकी तपस्या से संतुष्ट वराह भगवान ''वृष'' धर्म, तुम्हारी तपस्या से अभिवृद्ध हुआ। अतः इस पर्वत को 'वृषाद्रि' नाम प्राप्त हो'' ऐसा वर प्रदान किया। यह वृत्तान्त वामन पुराण के बत्तीसवें अध्याय में वर्णित है एवं 'अञ्जनाचल' आदि कई नाम इस पर्वत के हैं। पुराणों में जहाँ- तहाँ देख सकते हैं।

पूर्वोक्त ब्रह्मा आदि ही इस पर्वत के इन नामों को संकीर्तन करते हैं। ऐसा मान सकते हैं ॥१५॥

सेवापराः शिवसुरेशकृशानुधर्म-

रक्षोऽम्बुनाथ पवमान धनाधिनाथाः।

बद्धाञ्जलिप्रविलसन्निजशीर्षदेशाः

श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१६॥

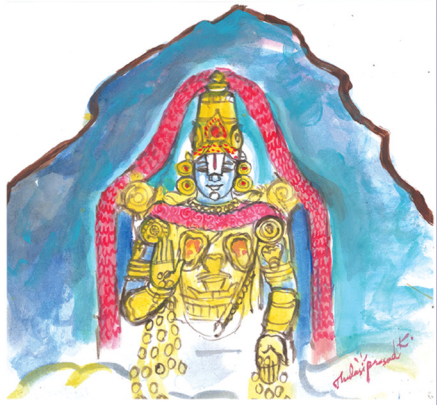

पदार्थ -

सेवापराः - आपकी सेवा में श्रद्धायुक्त,

शिव सुरेश कृशानु धर्म रक्षः

अम्बुनाथ पवमान धनाधिनाथाः - शिव इन्द्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु, कुबेर आदि देव,

बद्ध अञ्जलि प्रविलसत् - अञ्जलिबद्ध हस्त से उज्वल,

निजशीर्षदेशाः - अपने शीर्ष (मस्तक) वाले (होकर)

सन्ति - रहते हैं। श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - हे वेंकटाद्रि के नाथ! शिव इन्द्र आदि आठों दिक्पालक अपने मस्तक पर (हाथों) से अञ्जलि करते आपकी सेवा के लिए खड़े हैं। आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - शिव आदि आठों उत्तर पूर्व, दक्षिण पूर्व, दक्षिण पश्चिम, पश्चिम, उत्तर पश्चिम, उत्तर इन आठ दिशाओं का पालन करने वाले हैं।

अञ्जलिः- अम्जलयति - अकारवाच्य श्रीमन्नरायण को द्रवित करती है - दयावान कर देती हैं। इस कारण से (हाथों को जोड़ना) अञ्जलि कहा जाता है। मस्तिष्क, सम्पुट आदि कई प्रकार की अञ्जलि होती है।

मस्तक पर अञ्जलि करना मस्तिष्क प्रणाम, छाती के सामने अञ्जलि करना सम्पुट प्रणाम ऐसे अन्य प्रकार के प्रणाम श्री पाञ्चरात्रादि शात्रों में कहा गया है। यहाँ दिकपालक मस्तिष्क प्रणाम किये हैं, यह बताया गया है। इनके मस्तिष्क का अलंकार किरीट नहीं अंजलि ही है। यह भी बताया गया है ॥१६॥

धाटीषु ते विगहराज मृगाधिराज

नागाधिराज गजराज हयाधिराजाः ।

स्वस्वाधिकार महिगाधिकमर्थयन्ते

श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१७॥

पदार्थ -

ते धाटीषु - आपकी विजय यात्रा में,

विगहराज मृगाधिराज, नागाधिराज,

गजराज, हयाधिराजाः - गरुड, सिंह, आदिशेष, गजेन्द्र, हाथीराज ये लोग

स्वस्व अधिकार महिम अधिकम् - अपने-अपने हक, महानता आदि के जो वैभव है उससे अधिक वैभव को,

अर्थयन्ते - प्रार्थना करते हैं। श्री वेंकटेचलपते तव सुप्रभातम्

भावार्थ - हे श्री वेंकटाद्रि के नाथ! जब आप विजय यात्रा के लिए सैन्य के साथ निकलते हैं तब गरुड आदि, पूर्व प्राप्त हक महानता आदि वैभव से (उनके) अधिक वैभव को प्राप्त करने की प्रार्थना को लेकर आये हैं। आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - धाटी = दिग्विजय यात्रा। गजराज हयाधिराज आदि शब्द ऐरावत, उच्चै, श्रवस् आदि को बता (बोधित) कर इन्द्र के हाथी अश्व आदि उनके भ्राता (उपेन्द्र) श्रीवेंकटेशजी को भी होंगे (ये उनके भी हकदार हैं) ऐसा मानना भी उचित ही है।

गरुड आदि पाञ्चों दुश्मनों को नाश करने का अधिकार और अन्य वैभव भगवान से पूर्व में दिये गये हैं। फिर भी युद्ध के समय उनकी आज्ञा से बिना भूल-चूक के और भी विशेष जागरूकता से करने के लिए वे अपर्याप्त हैं समझकर, उदार भगवान से और अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं। ऐसा अर्थ भी बताते हैं ॥२७॥

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

कण्डवर् चिन्तै कवरुम् कडिपौळिल् तेन्नरंगन्
तोण्डर् कुलावु मिरामानुजनै, तोंहै यिरन्द
पण्डरु वेदंगळ् पार्मेल् निलविड प्पार्त्तरुळुम्
कोण्डलै मेवित्तोळुम्, कुडिया मेगंळ् कोकुलमे ॥५५॥

वेदानामनन्तानां भुवि प्रतिष्ठां विरचितवन्तं परमौदार्यशालिनम् सर्वजनमनोहरदिव्योद्यानपरिवृत श्रीरंग श्रेत्रललामभूतस्य रंगिणो भक्तैरभिनन्द्यमानं च रामानुजं सादरं सेवितुं भाग्यभागि येषां कुलं त एव नः प्रणतियोग्यास्सत्कुलप्रसुताः॥

स्वरप्रधान अनंत वेदों को इस धरातल पर सुप्रतिष्ठित कराने वाले, परमोदार और सर्वजनमनोहर सुगंधि उपवनों से परिवृत एवं दक्षिणदिशा के अलंकारभूत श्रीरंगदिव्यधाम के स्वामी श्रीरंगनाथ भगवान के परमभक्तों की प्रशंसा के पात्र श्री रामानुज स्वामीजी का सादर आश्रयण करनेवालों का कुल ही हमारे प्रणाम करने योग्य महात्माओं का कुल है। (अर्थात् श्रीरामानुजभक्तों को कुल ही सत्कुल कहलाता है और उस कुल में अवतीर्ण महात्माओं को हम अपने स्वामी मानते हैं।)

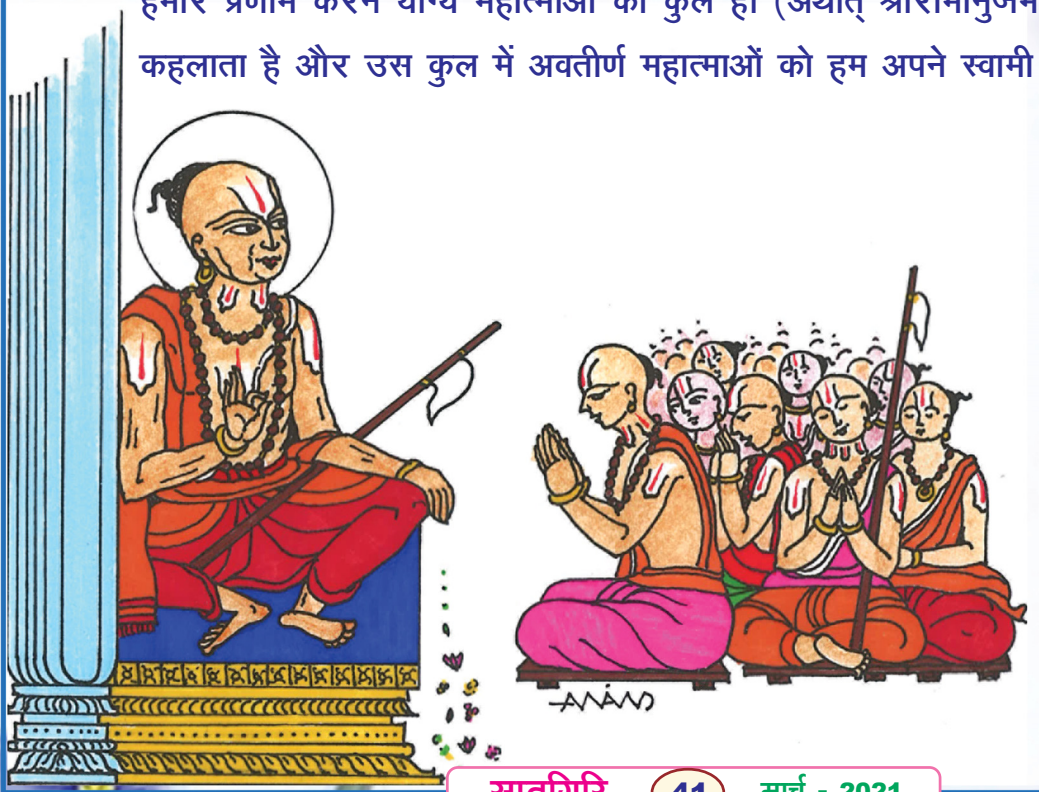

श्रीरामानुज भक्तों के कुल में अवतीर्ण महात्माओं को स्वामी मानना चाहिये।

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

१०४

श्रीमते रामानुजाय नमः

परन्तु मोहनी माया इस प्रकार भुलावा लगा रखी है कि हृदय में दशा आने हीं नहीं पाती। जैसा कि विशेष पुरुषों ने कहा है कि:-

''कहै सुनै समझे समझावै हृदय दशा नहिं आवै।''

इसका भाव ऊपर कह चुके हैं। इस माया को प्रकृति कहते हैं तथा अविद्या भी। इसके बहुत परिवार भी हैं। उनके जरिये ब्रह्माण्ड के सभी जीवों पर कब्जा जमाया है। परिवार असंख्य, उन में दस, बीस प्रधान हैं। उनके नाम ये हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मात्सर्य, ईर्षा, बैर, कुत्सा, अहंकार, ममकार, वासना, मन, इन्द्रियाँ इत्यादि। किसी को मैं गृहाधीश हूँ इस प्रकार अभिमान में डालकर मारती है। तो किसी को मैं मठाधीश हूँ इस प्रकार के अभिमान में चौपट करती है। किसी को मैं मालिक हूँ, घर भर का पालन-पोषण करने वाला हूँ मैं नहीं रहूँगा तो कौन काम चला सकता है इस प्रकार भुलावे में डाल कर रखती है। मैं मठाधीश हूँ मेरे को हजारों दण्डवत करते हैं, सैकड़ों को जिलाता हूँ, बहुत भजनानन्दी हूँ, माया से फरक हूँ सदा शुद्ध रहता हूँ, मेरे समान आचार विचार पालने वाले कोई भी नहीं हैं, मैं बहुत ज्ञान वाला हूँ, सब से ऊँचा हूँ, हमारी जाति सब से बड़ी है, मैं तो बहुत सुबोध हूँ, मेरे में तो इतनी विद्या है कि सब को पराजय कर देता हूँ। बहुतों को इस प्रकार अभिमान में डालकर नष्ट करती है। अनेकों को दूसरों की चुगली निन्दा में लगाकर फाँसाये रखती है। बहुतों को रूप में फँसा कर मारती है। क्रोध की मात्रा ज्यादा बढ़ाकर किसी से अनर्थ कराया करती है। वास्तव में विचार करने पर संसार में एक श्री भगवान के सिवा किसी का कोई भी नहीं है। परन्तु यह माया तो ऐसा गजब मोह जाल फैला रखी है कि असली चीज जो परमात्मा हैं उन से मानो किसी को कुछ मतलब ही नहीं रह गया। शास्त्र बहुत समझाता है कि भाई! खूब सम्भल कर रहो। जब तुम गर्भ में थे तो कोई तुम्हारे साथ नहीं था और जब मरने लगोगे तो कोई भी साथ नहीं जायेगा। जैसे इस माया रचित अनित्य शरीर तथा अनित्य शरीर सम्बन्धी कुटुम्ब के लिये सारा समय खोते हो वैसे ही सच्चे बन्धु अनादि पिता परमात्मा की सेवा के लिए कुछ समय लिया करो।

इस प्रकार शास्त्रों के द्वारा बहुबार समझाने पर भी यह अभागा जीव बिलकुल नहीं समझता है। समझना तो दूर रहा यदि कोई परमात्मा का नाम लेता है, भगवान की सेवा करता है, भगवान के नाम पर तिलक लगाता है तथा माला धारण करता है इसे देख कर माया से मोहित बहुत से अभागे जीव मजाक किया करते हैं और उसे छुड़ा देने के लिये अनेक प्रयत्न करते हैं। आत्मा के कल्याण के लिए शास्त्रों के द्वारा जो साधन बताये गये हैं पापी जीव उनको फिजूल कहते हैं।

इस प्रकार जगत में माया अपना ढंग जमा रखी है। जिस से सारा जगत उल्टाज्ञान वाला हो रहा है। नित्य को अनित्य, अनित्य को नित्य, सच्चा को झूठा, झूठे को सच्चा मान रहा है। यह माया धोखे में डाल कर सब जीवों से विपरीत काम करा रही है। पाप पुण्य का भगी इसको बना कर आप न्यारी हो जाती है। पता नहीं कब से हम जीवों को

फँसा रखी है। शास्त्र तथा बड़ों का यह कहना है कि अनादि काल से जीवों को दुर्दशा में पटक रखी है। माया प्रबल शक्ति है। इस के बिचार में बड़ों-बड़ों का दिमाग चकरा जाता है। माया के फन्दे में पड़ जाने के कारण ही हम जीवों में इतने असंख्य दोष भर गये हैं कि उनका गिनना मुश्किल हो गया है फिर छुड़ा कैसे सकता है। जैसा बड़ों ने कहा है:-

निगम शेष शारद निहोरि जो अपने दोष कहावों।

तौ न सिराहिं कल्प शत लगि प्रभु कहा एक मुख गावों।।

इसका भाव यह भया कि हे श्री रघुनाथजी! निगम शेष शारदा को भी निहोरि कर यदि अपना दोष आपके सामने कहवाना चाहूँ तो भी हमारे में इतने असंख्य दोष हैं कि करोड़ों कल्प तक शेष शारदा के गिनते रहने पर भी उनका अन्त नहीं हो पायेगा।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे मुमुक्षुओ! इस माया के कारण जीवों को क्या-क्या नहीं भोगना पड़ता है जिस की कुछ गिनती नहीं। इसका इतना आश्चर्यजनक कर्त्तव्य है कि ज्ञानी कहाने वालों को अज्ञानी बना रखी है और चतुर कहाने वालों को बेवकूफ। संसार का सुख अनित्य है। आज या दस दिन में यह शरीर मिट्टी में मिलने वाला है। इसके जितने साथी हैं ये न गर्भस्थली में रहते समय कुछ सहारा दिये थे, न मरते समय किसी के साथ मरते हैं।

शरीर, कुटुम्ब, महल, सोना, चांदी, हीरा, मोती, गज, रथ, स्त्री, पुत्रादि ये सब जुटाना अनित्य है। क्षण भंगुर है। दश दिन आगे पीछे अवश्य परवश छूट जाने वाला ही है। सारा स्वांस का खेल है। स्वांस गया कि सब पर पानी फिरा। यह मालूम नहीं कि शरीर में यह स्वांस कब तक रहेगा। बहुतों को देखे कि चलते चलते हार्ट फेल हो गया। उसके सारे मनोरथ पर पानी फिर गया। आराम के लिये धन सञ्चय वगैरह अनेक प्रयत्न उसके निष्फल हुए। स्वांस है तो सब है और स्वांस गया तो कुछ नहीं। एक स्वांस के न रहने पर कोई भी क्यों न हो उसी वक्त मुर्दा शब्द से पुकारा जाता है और किसी न किसी प्रकार मिट्टी में मिला दिया

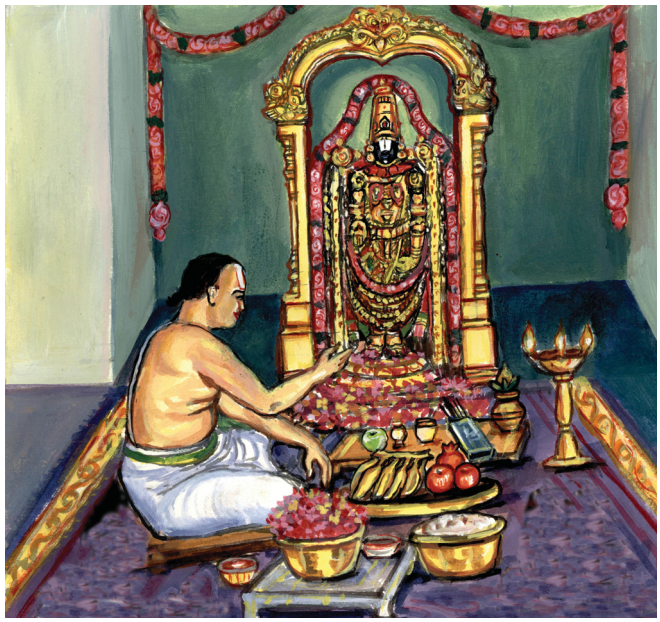

जाता है। जो कुछ है सब स्वांस से है और उस स्वांस का मालिक परमात्मा है। परमात्मा जब तक चाहें तब तक यह स्वांस शरीर में है। वह जब चाहें तब निकाल कर बाहर कर दें।

इस पूर्वोक्त बातां को दुनियाँ में ऐसा कौन शरीर धारी है कि नहीं जानता है। परन्तु बड़ों के तथा शास्त्रों के द्वारा बार-बार समझाने पर भी यह किसी को नहीं जमती है। क्षण में छूट जाने वाले सांसारिक वस्तुओं की तरफ लोगों का जितना झुकाव हो रहा है उतना स्वांस के मालिक प्यारे परमात्मा में नहीं नजर आता है। बड़े-बड़े प्रेमी भक्त कहाने वालों का बेटा-बेटी के ब्याह में जितना उत्साह होता है, उस समय जितना खर्च करने के लिए उदारता आती है उस तरह प्रेम से भगवान के उत्सव में भगवान के लिए किञ्चित् भी नहीं पायी जाती है। पुत्र होने के समय महीनों गाना बजाना उत्सव उत्साह सुनने में आता है उस प्रकार भगवान के उत्सव में नहीं देखने में आता है। जो दुनियाँ में अपने को उच्च कोटि का भक्त मानते हैं उनके घर में भी उनकी स्त्री पुत्रों के लिए जितने भूषण वस्त्र देखने में आता है उतने उनके सेवा विग्रह के शृङ्गार सजावट के लिए नहीं। जँवाई के आने पर जितने प्रकार के पदार्थ बनते हैं उतने प्रकार के भगवान के भोग के लिए कभी नहीं बनाये जाते।

क्रमशः

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(१९वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

गोविन्ददास का श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी से समाश्रित होना

भगवान् श्री भाष्यकार की आज्ञा पाकर वे श्रीवैष्णव गोविन्दाचार्य की शरणागति सम्बन्धी आख्यान को कहने लगे - ''कुछ दिनों बाद श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी भगवान् वेंकटेश को साष्टांग प्रणिपात करके हम शिष्यों के साथ कालहस्तिपुर के सन्निकट आये। वहाँ जाकर सुवर्ण नामक जलाशय के सन्निकट जाकर शिष्यों को सहस्र गीति का कालक्षेप सुनाने लगे। वहीं पुष्पों को चुनने के लिए गोविन्दाचार्य भी आये द्वितीय शतक की दश गाथाओं के बाद तीन गाथाओं को वे मौन होकर सुनते रहे। चौथी गाथा के - ''जिन भगवान् विष्णु के नाभि कमल के ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं, जो चराचर समस्त जगत् के एकमात्र कारण हैं, जो समस्त कल्याण गुणगणाकार एवं अखिलहेय प्रत्यनीक दो (लिंगो) चिह्नों को धारण करते है उनको छोडकर दूसरे देवता की पूजा के लिए पुष्प चयन उचित नहीं हैं।'' अर्थ को सुनकर गोविन्दाचार्य ने तीन बार पूछा कि - ''क्या नारायण की ही पूजा करनी चाहिए, दूसरे की नहीं।'' फिर तीनों बार उसका नकारात्मक उत्तर पाकर उन वैष्णववर्य के सामने ही पुष्पों को फेंककर रुद्राक्ष की मालायें तोडकर कपडे से शरीर में लिपटे हुए भस्म को झाडते हुए यतिश्रेष्ठ श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी के चरणों में गिरकर गोविन्दाचार्य बहुत ही दुःखी ही गये। गोविन्दाचार्य पूर्णकार्य श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी के चरणों में गिरकर कहने लगे कि - ''भगवन्! मैंने लीला एवं नित्य दोनों विभूतियों के स्वामी, घट-घट में व्यापी श्रीवक्ष, कमलनेत्र गोवर्द्धनधारी, सर्वान्तर्यामी, सकल जगदुदयविभवलयलील, स्वर्णिम पीताम्बरधारी नारायण भगवान् को छोडकर, विपर्यस्त वेषधारी, विषकण्ठ, श्रीरहित वक्षस्थल वाले, विरूपाक्ष एवं कपाली शंकर पर मोहित हो गया हूँ।''

गोविन्दाचार्य को अत्यन्त दीनावस्था में देखकर श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी यह सोचकर कि श्रीयामुनाचार्य की श्रीसूक्ति विफल नहीं गयी, अपने हाथों से गोविन्दाचार्यजी के अंगो को पोंछते हुए अपनत्व प्रदर्शित किया। इसी बीच इस सम्वाद को सुनकर शिव मन्दिर के शिवभक्त श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी से बोले कि - ''आप लोगों ने तन्त्रों एवं

मन्त्रों के मायात्मक प्रयोगों से गोविन्दाचार्य को मोहित कर लिया है।'' उन शिवभक्तों की वाणी सुनकर श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले कि आप गोविन्दचार्य से ही पूछ लें कि- वे स्वयं इस तथ्यमार्ग की ओर प्रवृत्त हुए हैं कि हम लोगों ने उन्हें बाध्य किया है। हम लोगों की माया समझें या कुछ भी समझें सन्मार्गोपदेश एवं सदाचार ही है। हम लोग अन्य मार्ग को ग्रहण नहीं करते। श्रीशैलपूर्णाचार्य की वाणी सुनकर शिवभक्त ब्राह्मण गोविन्दाचार्य से बोले - ''श्रीमन्! कालहस्तीश्वर की पूजा की बेला बीत रही है, वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अतः आप शीघ्र चलें। फिर वे गोविन्दाचार्य का हाथ पकडकर उन्हें चलने के लिये प्रेरित करने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर श्रीगोविन्दाचार्य का हाथ पकडकर उन्हें चलने के लिये प्रेरित करने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर श्रीगोविन्दाचार्य उनसे अपना हाथ छुडाते हुए बोले शिवभक्त ब्राह्मणो! शिव-सम्बन्ध के कारण हमारे और आप लोगों के बीच तादात्म्य सम्बन्ध था, किन्तु अब मेरा सम्बन्ध विष्णु से हो जाने से हम लोगों में कोई सम्बन्ध नहीं रहा। अब आप लोग और हम भिन्न भिन्न है। और फिर उन लोगों से अपना हाथ छुडाकर गोविन्दाचार्य उनसे परांगमुख हो गये। इसके चलते उन शिवभक्तों ने श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी को कालहस्तिपुर से आने नहीं दिया। दूसरे दिन जब श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी नित्य कृत्य करके अभी बैठे ही थे कि शिवभक्त ब्राह्मण आकर उनसे बोले कि हम लोग यह जानते थे कि आप गोविन्दाचार्य को ही लेने के उद्देश्य से यहाँ आये थे। अतः आपसे झगडा भी करते थे, किन्तु आज रात्रि

के स्वप्न में भगवान् शंकर ने यह आदेश दिया है कि- पाषण्डियों, बौद्धो एवं चार्वाकों के द्वारा जब त्रयीधर्म (ऋ ग्, यजु, एवं सामवेद द्वारा प्रतिपादित यागादिक धर्म) जब लुप्त हो रहा था उस समय विष्णु के अंशभूत त्रिदण्डधारी दत्तात्रेय ने त्रयीधर्म की रक्षा की। आज पृथ्वी पर क्रमशः शेष गरुड एवं पांचजन्य के अंश से श्रीरामानुजाचार्य, गोविन्दाचार्य एवं दाशरथी स्वामी अवतरित हुए हैं। पहले यादवप्रकाशाचार्य के साथ जब गोविन्दाचार्य गंगा- स्नानार्थ प्रयाग गये थे तो उस समय मैं ने उनकी बुद्धि भ्रमित करके उनके हाथ में लिंग प्रदान कर दिया। इसके चलते ही गोविन्दाचार्य भक्तिपूर्वक मेरी नित्य ही पूजा करते रहते थे। किन्तु गोविन्दाचार्य मेरे वशवर्ती नहीं हैं। अतः श्रीमान् आप हम लोगों को क्षमा प्रदान करके गोविन्दाचार्यजी को अपना लें। इसके श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी श्रीगोविन्दाचार्य का विधिवत् पंचसंस्कार सम्पन्न करके सहस्रगीति का अध्ययन कराकर अर्थपंचक विज्ञान को बतलाया। गोविन्दाचार्य भी श्रीरामभक्त लक्ष्मण की तरह श्री शैलपूर्ण स्वामीजी की सेवा करने लगे। गोविन्दाचार्य का यह वृत्तान्त सुनकर सभासदों तथा शिष्यों के साथ आदिशेष श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उठकर अपने मठ में चले गये। जो मनुष्य गोविन्दाचार्य के इस वृत्तान्त को सुनता अथवा पढता है उसकी दृढभक्ति भगवान् विष्णु में हो जाती है।

क्रमशः

(गतांक से)

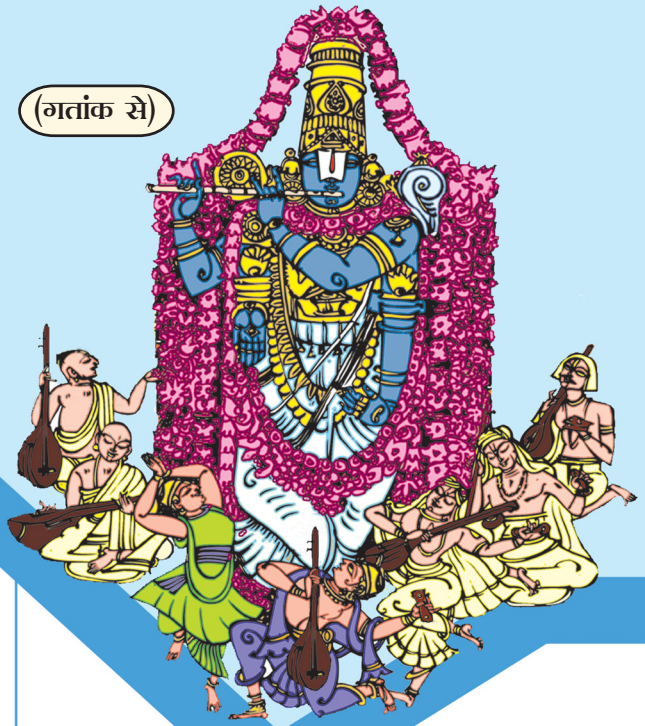

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६१८

श्री व्यासराय विरचित 'श्रीनिवास स्तुति'

''ईशुमुनिगलिद्देम माडिदरु व्यासमुनि मध्यमतव मद्दिरिसिद''

पुरंदरदास जी ने व्यासरायजी की स्तुति की कि अनेकानेक ज्ञानियों की विद्यमानता होने के बावजूद, मध्वसंप्रदाय का उद्धार व्यासजी के द्वारा ही हुआ। मध्वाचार्यपीठ को जितने यतियों ने सुअलंकृत किया, उन में व्यासराय जी सुप्रसिद्ध बने। इन्होंने 'सिरिकृष्ण' नामक कृति में भक्ति-वैराग्य प्रबोधक असंख्यक संकीर्तनों को कन्नड भाषा में प्रस्तुत किया। इनके कीर्तन संगीत संबंधी लक्षणों से बद्ध होकर, भजन संप्रदाय के अनुकूल भी गाने योग्य बने हैं। ये, पुरंदर तथा कनकदास के गुरु बने थे। इतना ही नहीं, इन्होंने तर्कतांडमु, न्यायामृतमु चंद्रिका नामक ग्रंथों का प्रणयन कर चंद्रिकाचार्य नाम से प्रसिद्धि पाई। इनके कुछ प्रसिद्ध कीर्तन ये हैं- 'कृष्ण नी बेगने बारों', 'जनुमजनुमदलि कोडुकंड्यहरिये', 'अंतरंगदलि हरियकाणदव हुहटुकुरुडनों', 'नमपार्वती पतिनुतजनपाल'। व्यासराय गुरु के वचनों का यथातथ पालन करनेवाले महिमात्मा हैं। गुरु के आदेशानुसार व्यासजी ने श्रीनिवास की सेवा कर, श्रीनिवास की स्तुती तीन श्लोकों के द्वारा की यथा-

''प्रातः स्मरामिरमया सह वेंकटेशम्।
मंदास्मितं मुख सरोरुह कांतिरम्यम्।
माणिक्य कांति विलसन्मकुटोर्द्ध पुण्ड्रम्।
पद्माक्ष लक्ष्मणि कुंडल मंडितांगम्।।

प्रातःस्मरामि कररम्य सुशंख चक्रम्।
भक्ताभयप्रद कटिस्थल दत्तपाणिम्।
श्रीवत्स कौस्तुभलसन्मणि कांचनाढ्यम्।
पीतांबरं मदनकोटि सुमोहनांगम्।।

प्रातर्नमामि परमात्म पदारविन्दम्।
आनंद सांद्र निलयं मणिनूपुराढ्यम्।
येतत्समस्त जगतामितिदर्श यंतम्।
वैकुंठमत्र भजतां करपल्लवेन।।

व्यासराजयति प्रोक्तं श्लोकत्रय मिदं शुभम्।
प्रातः काले पठेद्यस्तु पापेभ्योमुच्चते नरः।।

श्रीव्यासरायजी का वृंदावन, नववृंदवन नामक स्थान में विद्यमान है।

श्रीवादिराजस्वामी द्वारा स्तुत्य श्रीवेंकटेश्वर भगवान

उडिपि अष्टमतों में, सोदामठ परंपरा के पथ में चलने वाले यतिश्रेष्ठ, हयग्रीवोपासक, वागीशकरकमल संनात, तीर्थप्रबंध, रुक्मिणीश विजयमु, युक्तिमल्लिका ग्रथों के प्रणेता, कन्नड भाषा में लक्ष्मीशोभा नामक दिव्य स्तोत्रों के प्रणेता, इसके साथ-साथ अनेकानेक स्तोत्रों के रचनाकार, हयवदन नामक पदों के रचनाकारक अपने १२० वर्षों के जीवनावधि में उडिपि में अनेकबार श्रीकृष्ण की सेवा करनेवाले, महिमात्मा, जिनके स्मरण मात्र से समस्त पाप धुल जाते हैं, समस्त अभीष्टों के प्रदाता, सोंदाश्रेत्रम में पंचवृंदावन में विराजमान श्रीवादिराज गुरु सार्वभौम, विश्व में प्रातःस्मरणीय गुरुवर हैं। इतिहास कहता है कि ये अपने जीवन काल में तिरुमल में अनेक बार आये, श्रीनिवास का दर्शन किया तथा शालग्रामों से माला बनाकर स्वामी को समर्पित किया। इन्होंने अपनी कृति तीर्थ प्रबंध में तिरुपति क्षेत्र तथा उसके क्षेत्रपालक वेंकटेश्वर स्वामी का विस्तृत रुप से तात्विक विवेचन कर, उनका यशोगान किया।

श्रीवेंकटलपच्छैल वासीदासी कृतामराः।
छायया पातुमां नित्यं श्रीनिवास सुरद्रुमः।।

प्रकाशमान श्रीवेंकटगिरि पर विराजमान श्रीनिवास नामक कल्पवृक्ष की छाया, सदा मेरी रक्षा करेगी, समस्त देवता, श्रीनिवास के दास बनकर यहाँ रह रहे हैं।

दृष्ट्वादि शिदिशि स्वीयान् दययापालयन्निव।
वर्तते विश्वश्चक्षुर्वेंकटे वेंकटेश्वरः।।

सहस्रचक्षुओं से इस विश्व पर कृपावृष्टि करने के लिए श्रीवेंकटेश्वर भगवान ऊँचे पहाड़ पर खडे होकर वहाँ से दृष्टि का प्रसार कर अपने भक्तों की रक्षा कर रहा है।

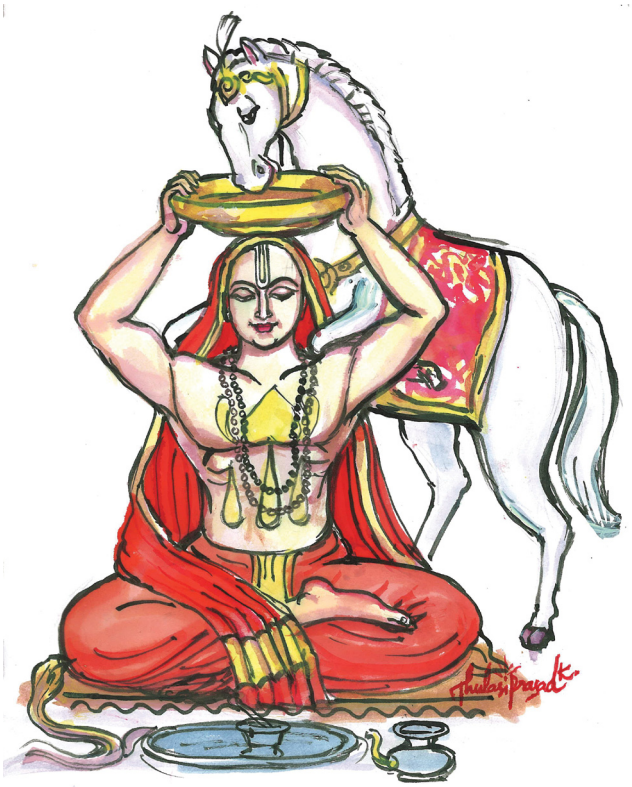

येशंख चक्रोज्ञवल बाहुयुग्माः।
स्वांघ्रिं भजंते भवसिंधुरे षाम्।
कटि प्रामाण स्त्विाति वेंकटेशः।
स्पुटीकरोत्यात्म करांबु जातैः।।

अपने बाहुद्वय में शंख-चक्र को धारण करनेवाले श्री वेंकटेश्वर भगवान, दक्षिण हस्त से अपने चरणों की और दिखाते हुए यह सूचित करते हुए दिखाई देते हैं कि जो मेरे चरणों में आयेंगे, उनको इस भवसागर से तारुंगा, दूसरे हाथ को कटि पर रखकर यह कहते दिखाई देते हैं कि सागर को केवल कटि तक ही रखूंगा और आपको पार कराऊँगा।

प्रायोन्यत्र गतां श्रियं निगवशांकर्त्यम् मुहुः कांक्षितम्।
भक्तानां प्रदिशन धनं प्रतिदिनं संसाध्यसाहय प्रिय्यः।।

तत् तत्तैव पुनः सहस्र गुणितं पश्यन् घनश्यामलः।
तोशां वेश्मसु विस्मितोनिनसति श्रीवेंकटेशोनिषम्।।

क्रमशः

होली की विशिष्टता

- डॉ.पी.बालाजी
मोबैल : ९९५९५५५५८९

होली भारत के सबसे पुराने पर्वों में से एक है। होली की हर कथा में एक समानता है कि उस में ''असत्य पर सत्य की विजय'' और दुराचर पर सदाचार की विजय'' का उत्सव मनाने की बात कही गयी है। इस प्रकार होली मुख्यतः आनंदोल्लास तथा भाई - चारों का त्यौहार है। यह लोक पर्व होने के साथ ही अच्छाई की बुराई पर जीत सदाचर पर जीत व समाज में व्याप्त समस्त बुराईयों के अंत का प्रतीक है। होली का पर्व हिन्दुओं के द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहारों में से एक है। होली पूरे भारत में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाने वाला त्योहार है। हर भारतवासी होली का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाते है। सभी लोग इस दिन अपने सारे गिले, शिकवे भुलाकर एक दुसरे को गले लगाते हैं। होली के रंग हम सभी को आपस में जोडता है और रिश्तों में प्रेम और अपनत्व के रंग भरता है। हमारी भारतीय हिन्दु संस्कृति का सब से खूबसूरत रंग होली के त्योहार को माना जाता है।

होली मनाने के लिए विभिन्न वैदिक व पौराणिक मत है। वैदिक काल में इस पर्व को नवान्नेष्टि कहा गया है। इस दिन खेत के अधपके अन्न का हवन कर प्रसाद बांटने का विधान है। इस अन्न को होली कहा जाता है। इसलिए इसे होलिकोत्सव के रुप में मनाया जाता था। इस पर्व को नवसंवत्सर का आगमन तथा वसंतागम के उपलक्ष्य में किया हुआ यज्ञ भी माना जाता है। कुछ लोग इस पर्व को अग्नि देव का पूजन मात्र मानते है। मनु का जन्म भी इसी दिन माना जाता है। अतः इसे मन्वादितिथि भी कहा जाता है। पुराणों के अनुसार भगवान शंकर ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था तभी से यह त्योहार मनाने का प्रचलन हुआ।

होली का त्योहार प्रकृतिक सौंदर्य का पर्व है। होली का त्योहार प्रतिवर्ष फालगुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। होली से ठीक एक दिन पहले रात्रि को होलिका दहन होता है। उसके अगले दिन प्रातः से ही लोग रंग खेलना प्रारम्भ कर देते है। होली का त्योहार मस्ती और रंग का पर्व है। यह पर्व बसंत ऋतु से चालीस दिन पहले मनाया जाता है। सामान्य रुप से देखे तो होली समाज से बैर द्वेष को छोडकर एक दुसरे से मेल मिलाप करने का पर्व है। इस अवसर पर लोग जल में रंग मिलाकर, एक दूसरे को रंग से सरोबोर करते है। टेसू के फूलों से युक्त जल में चन्दन के सर और गुलाब तथा इत्र इत्यादि से बनाये गये प्रकृतिक रंग इस उत्सव की खूबसुरती बढा देते है। पौराणिक समय में श्री कृष्ण और राधा की बरसाने की होली के साथ ही होली के उत्सव की शुरआत हुई।

महान पर्व होली के एक दिन पूर्व होलिका दहन होता है। होलिका दहन बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है, परंतु यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका का दहन बिहार की

धरती पर हुआ था। जनश्रुति के मुताबिक तभी से प्रतिवर्ष होलिका दहन की परंपरा की शुरुआत हुई।

भारत में होली का उत्सव आलग अलग प्रदेशों में अलग अलग तरीके से मनाया जाता है। आज भी ब्रज की होली सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। लठमार होली जो कि बरसाने की है वो भी काफी प्रसिद्ध है। इस में पुरुष महिलाओं पर रंग डालते है और महिलाएँ पुरुषों को लाठियों तथा कपडे के बनाए गए कोडों से मारती है। इसी तरह मथुरा और बृंदवन में भी पंद्रह दिनों तक होली का पर्व मनाते है। कुमाऊँ की गीत बैठकी की होती है जिस में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती है। होली के कई दिन पहले यह सब शुरु हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताये जाने की प्रथा प्रचलित है। विभिन्न देशों में बसे हुए प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कान या बृंदवन के बांके बिहारी मंदिर में अलग-अलग तरीके से होली के श्रृंगार व उत्सव मनाया जाता है। जिस में अनेक समानताएँ भी और अनेक भिन्नताएँ भी है।

❊❊❊

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

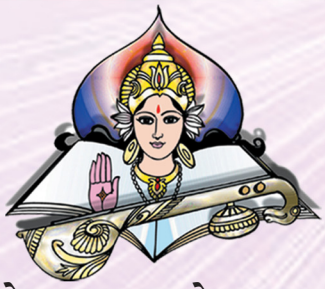

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मण्या
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

पञ्चमः पाठः = पांचवाँ: पाठ

एकः = एक	प्रातः = सुबह	अस्तु = वहाँ होना चाहिए (अंगीकार)
अनेके = बहुत	सायम् = शाम	एधि = बन रहें (तू)
कति = कितने	नक्तम् = रात	असानि = ठहरने दो (मुझे)

प्रश्न :
१. तत्र कति सन्ति?
२. एकः अद्य प्रातः तत्रासीत्।
३. सः तत्रास्तु।
४. त्वम् अद्य सायम् अत्र एधि।
५. सायं तत्र अनेके आसन्।
६. अहं तत्र असानि।
७. ते सर्वे नक्तं तत्र न सन्ति।
८. यूयं अद्य नक्तं कुत्रास्त?
९. वयं सर्वे अत्रास्म।
१०. कति अत्रासन्?

प्रश्न :
१. आज रात वहाँ रहने दो।
२. आज सुबह कितने वहाँ थे?
३. वहाँ एक था।
४. क्या तुम सब वहाँ थे।
५. हम यहाँ नहीं हैं।
६. कई लोग वहाँ थे।
७. मुझे यहाँ रहने दो।
८. वह अब कहाँ था।
९. वह यहाँ नहीं है।
१०. तू कब था?

उत्तर :
१. वहाँ कितने लोग हैं।
२. एक आज सुबह वहाँ था।
३. वहाँ रहने दो।
४. तू आज शाम को यहाँ रहे।
५. शाम वहाँ बहुत सारे लोग थे।
६. मैं वहाँ ठहरा था।
७. वे सब रात को वहाँ नहीं थे।
८. तुम आज रात कहाँ थे?
९. हम सब यहाँ थे।
१०. कितने लोग यहाँ थे?

उत्तर :
१. त्वम् अद्य नक्तं तत्र एधि।
२. अद्य प्रातः तत्र कति आसन्?
३. तत्र एकः आसीत्।
४. यूयं तत्र आसत किम्?
५. वयं अत्र नास्म।
६. अनेके जनाः तत्र आसन्।
७. मां तत्र असानि।
८. सः इदानीं कुत्रास्ति?
९. सः अत्र नास्ति।
१०. ते कदा आसीः?

सच्चाई का नशा

- श्री के.रामानाथन
मोबैल :९४४३३२२२०२

एक मालिक ऊँट खरीदने गया था। उसने व्यापारी से मोल भाव करके एक अच्छे ऊँट को खरीदकर उसे

अपने घर ले आया। उसने नौकर से ऊँट को अस्तबल में बाँधने और काठी उतार लाने को कहा। नौकर ने ऊँट को बाँध दिया और काठी को खोलने की बडी कोशिश की। कठोर प्रयास के बाद बाठी खोली तो चट से एक थैली खिसककर नीचे गिरि।

नौकर ने उस थैली खोलकर देखा और पाया कि उस में बहुमूल्य अनेक नवरत्न थे। उसने बडे आश्चर्य के साथ माली से मिलकर थैली दी। थैली में चमकते नवरत्नों को देखने के बाद मालिक ने उसे व्यापारी के पास पहुँचाने निकल पडा। यह देखकर नौकर ने समझाया, जनाब! यह तो खुदा की भेंट है और हमें मिली है। इसके बारे में अब तक किसी को पता भी नहीं। इसे हम अपने पास ही रख लेंगे। आप अधिक ले लीजिए और मुझे थोडा दे दीजिए। परंतु मालिक ने उसका इनकार करते हुए थैली के साथ व्यापरी से मिलने गया।

उसने व्यापारी से सारी बातें बताकर रत्नों से भरी थैली दे दी। थैली वापस पाकर व्यापरी को बड़ी खुशी हुई। उसने मालिक को धन्यावाद देते हुए कहा, आपकी सच्चाई के लिए मैं भेंट देना चाहता हूँ। आप इस थैली से अपने पसंद के कुछ रत्न ले लीजिए।

व्यापारी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, महाशय, आपके देने के पहले ही दो रत्नों को मैं ने ले रखा है। तब व्यापारी ने रत्नों को गिनकर देखा और उसका संख्या का बराबर पाया वह मालिक का उत्तर न समझ पाया। तब मालिक ने कहा, मैं ने जिन रत्नों के बारे में कहा, उन में एक है मेरी सच्चाई और दूसरा मेरा आत्मा सम्मान है। वह अपना जवाब बडे गर्व से देकर शान से अपने यहाँ लौटा।

सच्चाई से जीना कोई बडी बात नहीं। बल्कि गलती करने का मौका या अवसर मिले तो भी सच्चाई पर टिके

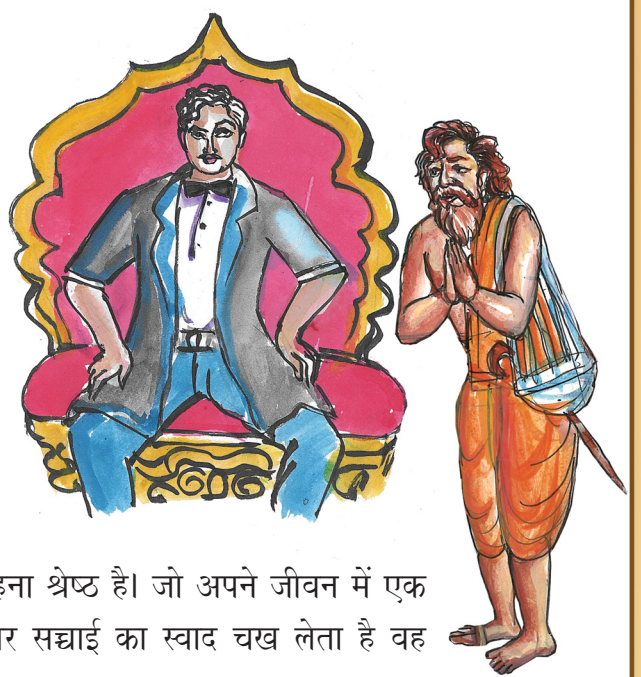

रहना श्रेष्ठ है। जो अपने जीवन में एक बार सच्चाई का स्वाद चख लेता है वह किसी भी अवसर में भी उसे खोने तैयार नही रहता हाँ, सच्चाई भी एक नशा है।

❋❋❋

चित्रकथा

किरातार्जुनीय युद्ध

तेलुगु - डॉ .के .रविचन्द्रन

चित्रकार - तुम्बलि शिवाजी

अनुवाद - डॉ .एम .एनी

अर्जुन ने इन्द्र को प्रसन्न करलिया।

इन्द्र देव! मुझे दिव्यास्त्रो को दिजिए।

पागल कही का! तुम्हें अस्त्रों का क्या जरूरी है। पुण्य लोक ही दूँगा सुखशांती से रहो।

मेरे सभी भाइयाँ वन में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं तो; मै अकेला ही सुख से कैसे रहूँ? मुझ से नहीं होगा, मरने के बाद भी मेरा यश वैसे ही बनी रहेगा। इतना ही नहीं थोडी सी सुख केलिए मैं अपयश नहीं बनुँगा।

बेटा तुम्हारी भलाई सराहनीय है। तुम्हारी इच्छा पूरी होने केलिए पहले तुम्हें शिवजी का दर्शन करो। करना चाहिए। पहले जाकर उनका दर्शन करलीजिए।

परमेश्वरा! ओ भक्तवत्सला! अर्जुन घोर तपस्या कर रहा है, उनका तप बंद कराके उनकी इच्छा पूर्ति कीजिए।

मुनिगण! तुम चिंता मत करो। मैं ही अर्जुन की इच्छा पूरा करूँगा।

ऋषियों के जाने के बाद शिव ने किरात वेष को धारण किया, पार्वती भी उनके अनुकूल ही वेष धारण किया। दोनों मिलकर अर्जुन जहाँ तपस्या करता था वहाँ जाकर टहलने लगे।

मूक नामक राक्षस ने सुअर के रूप में अर्जुन को मारने केलिए आया। तप में मग्न अर्जुन धनुष और बाण को लोकर उस सुअर को मारने केलिए गया।

अरे! उस सुअर को मैं ही मारूँगा तुम मत मारो।

तुम्हारी बात मैं क्यों सुनूँ।

अर्जुन और किरात दोनों ने उस सुअर को अपने बाणों से मारा।

दोनों का बाण लगकर राक्षस निज रूप में आकर मर गया।

कौन हो तुम? इस निर्जीवना वन में औरत को साथ में रखकर क्यों टहलते हो? राक्षस को मैं मार ही रहा था तो तुम मेरे समान बाणों को क्यों छोडा? यह शिकारी का धर्म नहीं है।

तुम एक नागरीक और सुकोमल की भाँति दिखाई दे रहे हो? निर्जीवन वन में तुम क्यों बैठे हो? इस सुअर को पहले मैं ही मारा था। तुम उसी को मारा। ताकत की घमंड से तुम मुझे गलत पकड रहे हो? इतना ताकतवान हो तो मुझ से युद्ध करने केलिए आओ।

अर्जुन ने किरात को अपने मुट्ठियों से मारने लगा। किरात भी अर्जुन को अपने मुट्ठियों से मारा। किरात के मार खा कर अर्जुन ने वे होश हो गया था।

अर्जुन होश में आया स्नान करके मिट्टी से बने शिवलिंगम के ऊपर फूलों का गुच्छा रखकर थोडी देर तक ध्यान करके किरात की ओर देखा तो, अर्जुन ने देखा। जो फूल लिंग के ऊपर रखा था वही फूल किरात के शिर पर था।

सावधान! तैयार रहो।

ये क्या बाण... क्या इससे भी अच्छा बाण नहीं है?क्या तुम ठीक तरह से युद्ध करना नहीं जानते हो?

तुम मुझ पर कृपा दृष्टि डालने केलिए इस रूप में आये हो क्या? धन्योस्मि।

अर्जुन तुम जैसा शूर वीर तीनों लोकों में नहीं है। मैं अपने दिव्यस्त्रों को तुम्हें दूँगा। उसकी महिमा से तुम शत्रुओं पर विजय पाओगे।

धन्यु बना देवदवा! दीनों की रक्षा करनेवाले दिव्यरुपधारी तुम्हारा दर्शन करना मेरा भाग्य ही भाग्य। मेरा तप और पूजा का फल प्राप्त हुआ।

शुभमस्तु अर्जुना।

उपार शक्तिवान इन अस्त्रों को हिसाब न करनेवाला। यह किरात साधारण आदमी नहीं है, माया वेश में मौजूद महान कोई आदमी है?

अग्निदेव ओर से प्राप्त हुआ अक्षयतूणीर खाली हो गया। गांडीव अदृश्य हो गया। अर्जुन अब निशस्त्र बन गया था।

अगली बार एक और दिव्य लीला का दर्शन करेंगे, तरेंगे...!

स्वस्ति।

'क्विज'

आयोजक - दिव्या.एन

१) रंगों का त्योहार किसे कहते हैं?

अ) होली आ) दीपावली इ) भीगी ई) राखी

२) दक्षिण काशी के नाम से कौन सा क्षेत्र प्रसिद्ध है?

अ) गंगोत्री आ) श्रीकालहस्ती इ) श्रीशैलम ई) महानंदी

३) रामायण में कितने कांड है?

अ) ९ आ) १२ इ) ७ ई) १८

४) होली के दिन किसका दहन किया जाता है?

अ) रावण आ) हिरण्यकश्यप इ) मन्मध ई) होलिका

५) द्रौपदी किसकी पुत्री थी?

अ) द्रोणाचार्य आ) कृपाचार्य इ) द्रुपद ई) काशीराज

६) समुद्र मंथन में सबसे पहले क्या निकला?

अ) हालाहल आ) रत्न इ) मोती ई) आभूषण

७) तुम्बुर तीर्थ का प्राचीन नाम क्या है?

अ) कुमारधार तीर्थ आ) घोण-तीर्थ इ) पाण्डव तीर्थ ई) सीतम्म धार

जवाब

१) अ २) आ ३) इ ४) ई ५) इ ६) अ ७) आ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

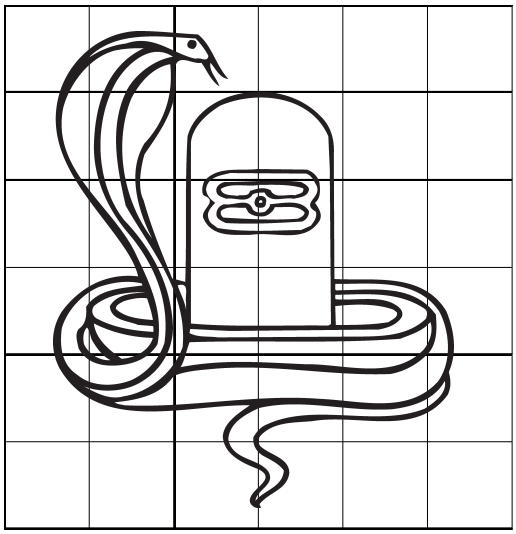

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

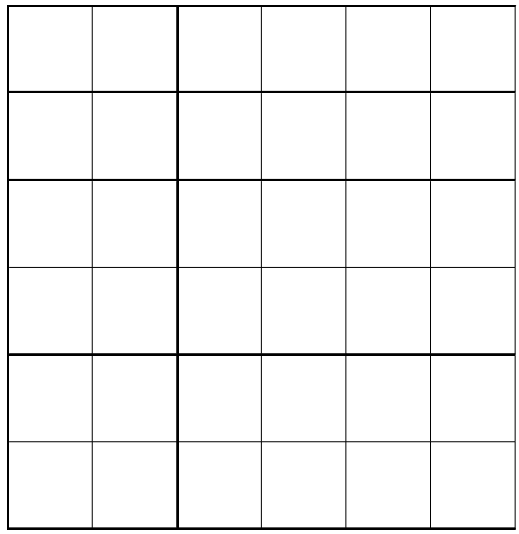

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

ऑटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव २१-०४-२०२१ से २९-०४-२०२१ तक

२१-०४-२०२१ बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - शेषवाहन

२२-०४-२०२१ गुरुवार
दिन - वेणुगानालंकार
रात - हंसवाहन

२३-०४-२०२१ शुक्रवार
दिन - वटपत्रसाई अलंकार
रात - सिंहवाहन

२४-०४-२०२१ शनिवार
दिन - नवनीतकृष्णालंकार
रात - हनुमत्सेवा

२५-०४-२०२१ रविवार
दिन - मोहिनीसेवा
रात - गरुडसेवा

२६-०४-२०२१ सोमवार
दिन - शिवधनुर्भाणालंकार
रात - एदुर्कोलु, कल्याणोत्सव, गजवाहन

२७-०४-२०२१ मंगलवार
दिन - रथ-यात्रा

२८-०४-२०२१ बुधवार
दिन - काळीयमर्दनालंकार
रात - अश्ववाहन

२९-०४-२०२१ गुरुवार
दिन - चक्रतीर्थ
रात - ध्वजावरोहण

तिरुपति
श्रीकपिलेश्वरस्वामी जी का
ब्रह्मोत्सव
२०२१ मार्च ०४ से १३ तक